निर्मल ज्योति

निर्मला कॉन्वेंट गर्ल्स इंटर कॉलेज झाँसी

प्रधानाचार्या की कलम से . . . . . .

आदरणीय पाठकों, अभिभावकगण,अध्यापक,अध्यापिकाओं एवं प्यारे बच्चों, आजकल तकनीकी तथा विकास की दौड़ से परिवर्तित परिधानों के घटते मूल्य संस्कारों के बीच प्रवाह के अनुरूप बहने के बजाय, कुछ हटकर अपनी आवाज उठाने की चुनौती मैं आपके सामने रखती हूँ क्योंकि–

आजकल बोलते तो सब है, पर सबकी आवाज में ताकत नहीं होती,
प्रवाह को परिवर्तित करने की, हिम्मत नहीं होती,
चुटकी भर नमक से साम्राज्य हिलाने की गुर्रत नहीं होती,

सच्चाई के लिए मरने और मिट जाने की काबिलियत नहीं होती। आवाज उठाना स्वयं के लिए नहीं, वरन् दूसरों की भलाई व सुरक्षा के लिए नितान्त आवश्यक है।

समय की पुकार है, हम सबका जुनून है,
असंवेदनशील चुप्पी से मात्र बढ़ रहे हैं अपराध,
कबूतरों की तरह गुटरगू करता है, सदा मध्यम वर्गीय समाज।
हिम्मत है तो उकाबों की तरह उड़कर दिखा हे मानव,
तू नहीं तेरे कार्य बोलेंगे तब,और बदलाव की आंधी की शुरूआत होगी।
दे तू आवाज, बन तू आवाज, बन तू आवाज
सुन ईश्वर की वाणी, बन तू आवाज,
सुन धरती की पुकार, बन तू आवाज,
सुन दलितों की पुकार, बन तू आवाज,
जो न बोल सके उनके लिए, बन तू आवाज,
असहायों, दुखिःयों व पतितों के लिए, बन तू आवाज।

आवाज बनकर एक ऐसी बदलाव की ऑधी लानी है जो झकझोर कर रख दे। परम्परावादी प्राचीन रीति रिवाजों को,दास्य कर देने वाले पुरातन अंधविश्वासों को, सतत् चली आ रही पुरूष प्रधान पूर्ण धारणाओं को, जंजीरों मे कैद रखने वाली संकुचित मानव सोच को। प्यारे बच्चों समाज को कुछ देने के लिए स्वयं को सक्षम तथा सर्वगुण सम्पन्न बनाने का हर संभव प्रयास करें। मात्र परीक्षार्थी बनने की अपेक्षा ज्ञानार्थी बनने का प्रयत्न करें। जो यह अद्भुत और अनमोल आवाज बनने का स्वप्न मैने देखा है और आपके साथ बॉटा है तथा वार्षिकोत्सव में आपने इसका संदेश सर्वत्र फैलाया है, मैं आप सभी को हमारे देश की यही आवाज बनते देखना चाहती हूँ।

सिस्टर पूनम सी.जे
प्रधानाचार्या

शैक्षणिक कैलेण्डर

2023-2024

संपादकीय

सत्र 2023–2024 में वर्ष भर चलने वाले कार्यकमों को एक सूत्र में पिरो देने वाली विद्यालय की पत्रिका ''निर्मल ज्योति'' का संपादन एवं प्रकाशन करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि एक बार पुनः समस्त कार्यकमों को रूपरेखा सरल एवं सुबोध तरीके से पाठकों तक पहुँच सकेगी।

'निर्मला कॉन्वेंट अपनी स्थापना के .....79.....वर्ष पूरे करने जा रहा है। कहते हैं कि अनुभव भी एक पूरी की पूरी किताब होती है, उसी प्रकार से यह विद्यालय भी अपने नवीन अनुभवों के साथ नये आयाम जोड़ता जा रहा है और उम्र बढ़ने के साथ–साथ साल दर साल युवावस्था को प्राप्त हो रहा है।

पिछले वर्ष अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय ने अपना शैशवकाल प्रारम्भ किया था, जो अब प्रधानाचार्या एवं शिक्षक/शिक्षिकाओं के परिश्रम से सफलता प्राप्त करते हुए खड़े होने के लिए प्रयासरत है और आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आगामी कुछ ही वर्षों में छात्राओं को अंग्रेजी माध्यम से गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करते हुए यह विद्यालय इण्टरमीडिएट तक की कक्षाओं तक सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के एक श्रेष्ठ विद्यालय के रूप में होगा। इस वर्ष विभिन्न नवीन शिक्षणेत्तर गतिविधियों को रूपरेखा में सम्मिलित किया गया, जिससे छात्राओं का ज्ञानवर्धन हुआ। इस वर्ष के संस्करण की एक बात और बहुत खास होने जा रही है कि अब यह पत्रिका ई–बुक के रूप में भी पाठकों के समक्ष होगी जिसे विद्यालय की बेबसाइट पर डाला जाएगा।

आशा करती हूँ विद्यालय की यह पत्रिका 'निर्मल ज्योति' अपने नवीन अनुभवों के साथ नये–नये कलेवर में पाठकों के समक्ष इसी प्रकार पहुँचती रहे।

श्रीमती रेखा भार्गव (प्रवक्ता)

From the pen of the editor

In a world brimming with information, our curiosity becomes the compass guiding us through the vast expanse of knowledge. As we embark on the journey of exploration, let us not forget the essence of creativity that accompanies it. Our school serves as a guide to students, shaping their creativity and allowing them to express their talents and ideas on the pages of our magazines. Through its pages, we celebrate their critical thinking and artistic expression. Let us continue to embrace curiosity and creativity, for these are the driving forces propelling them towards a brighter and more enlightened future.

Nilam Gupta (Lecturer)

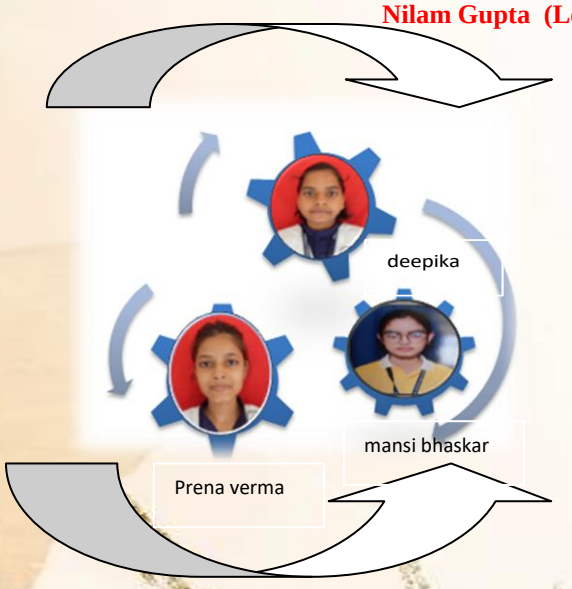

विरासत छोड़कर.....

विरासत जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। विरासत शब्द स्मृति में आते ही जो विचार सबसे पहले मस्तिष्क में आते है वह है धन–सम्पति संबंधी विरासत अथवा भौतिक साधनों से सम्बन्धित विरासत। किन्तु ऐसा नहीं है, कि विरासत केवल धन ,सम्पत्ति अथवा भौतिक सुख साधनों तक सीमित है। एक शिक्षक भी अपने छात्र–छात्राओं को विरासत के रूप में बहुत कुछ देता है। यह विरासत हमारे विचारों,कार्यों तथा नैतिक मूल्यों का प्रतिबिम्ब है। मेरा मानना है कि हम छात्र–छात्राओं के जीवन में एक सकारात्मक विरासत छाड़ने का प्रयास करते है। इसके कई प्रकार हो सकते हैं जैसे–

1. ज्ञान और शिक्षा – हम जो भी ज्ञान अथवा शिक्षायें अपने छात्र–छात्राओं को प्रदान करते हैं वे उन्हें जीवन में सफलता और खुशी प्राप्त करने में मदद करते हैं।
2. नैतिक मूल्य – शिक्षक–शिक्षिकायें अपने छात्र–छात्राओं को मानवीय मूल्यों और नैतिकता का पालन करने के लिए अभ्यस्त करते है। ये नैतिक मूल्य उसे अच्छा इंसान बनाते हैं।
3. कौशल और क्षमता – शिक्षक अपने छात्र–छात्राओं में विभिन्न कौशल और क्षमताओं का विकास करते है। जो उन्हे जीवन मे आने वाली चुनौतियों का सामना करने और कुशल जीवन यापन के योग्य बनाती है।

मैं भी इस विद्यालय में लगभग 20 वर्षों से शिक्षण कार्य कर रही हूँ और इस वर्ष सेवा निवृत्त होने जा रही हूँ। यदि मैं सोचूँ कि मैं अपनी छात्राओं में क्या विरासत छोड़ कर जा रही हूँ तो शायद मैं स्वयं ही न कह सकूँ। लेकिन मेरी बनारस यात्रा के दौरान मिली विद्यालय की दो छात्राओं ने मुझे यह एहसास करा दिया। वे दोनों छात्राएँ थी –प्रतिष्ठा अग्निहोत्री और नित्या जैन। जैसे ही उन्होंने मुझे देखा वे मेरे पास मिलने आई। वे दोनों ही इस समय सरकारी पदों पर कार्य कर रही हैं और भोपाल में कार्यरत है। प्रतिष्ठा ने बताया कि इंटरव्यू से लेकर ऑफिस में कार्य करने तक मैं आपको बहुत याद करती हूँ। हिन्दी से सम्बन्धित प्रत्येक कार्य के लिए मुझे ही आगे किया जाता है यदि कहीं बोलने की बारी होती है। ता मुझे ही पूछा जाता है। तब मैं उन दिनों की याद करती हूँ जब कक्षा में शुद्ध उच्चारण के लिए आप मुझे टोकती थी। उस समय शायद यह टोकना अच्छा नहीं लगता था। पर आज उसके महत्व को समझ रही हूँ। मेरी समझ से एक शिक्षक द्वारा दी गयी यह विरासत ही है जो बच्चे के साथ सदैव रहती है। यह विद्यालय मेरे लिए मात्र एक इमारत या जीविकोपार्जन का साधन मात्र नहीं है। यहाँ की मिट्टी का एक–एक कण मेरा अपना है। इस मिट्टी में प्रतिदिन मुस्कुराहट से भरे सजीव फूल खिलते हैं। जिनमें खुशबू भरना हम शिक्षकों का काम है। मैं इन फूलों और यहाँ के कोने––कोने में अपने संगीत की झनकार छोड़ जाऊँगी। एक शिक्षक / शिक्षिका द्वारा अपने छात्र–छात्राओं को दी गयी यह विरासत ही है,जो उसे दृढ़ चरित्रऔर प्रभावी व्यक्तित्व वाला मानव बनाती है,जो जीवन भर उसके साथ रहती है। जो उसकी आत्मा का अंग बन जाती है और तब वह हमारे ही प्रतिबिम्ब के रूप में हमारे सामने होता है।

यदि ये विरासत छात्र–छात्राओं में सुचारू रूप से हस्तान्तरित होती रही तो मैं एक सुन्दर समाज का निर्माण होते देख रहीं हूँ।

श्रीमती रेखा भार्गव (प्रवक्ता)

एक सुबह

दिनॉक 17 मई, दिन बुधवार का था। कुछ ही दिन शेष रह गये थे,गर्मियों की छुट्टियॉ होने में। हम सभी छात्राएं अपनी कक्षाओं में बैठकर बेसब्री से इन्तजार कर रही थी 10 बजने का। क्योंकि यह वह दिन था जब हमारे विद्यालय में हमें प्रोत्साहित करने झॉसी महिला पुलिस थाने की अध्यक्ष (एस0एच0ओ0) श्रीमती नीलेश कुमारी जी आमान्त्रित थीं। हालॉकि वह दूसरी बार यहॉ आ रही थीं पर फिर भी उन्हें देखने और उनकी बातें सुनने के लिए छात्राएं उत्सुक थीं। एक महिला के चरित्र में जितने गुण होने चाहिए वे सभी उनमें विद्यमान है। वह एक सशक्त व निडर महिला पुलिस अधिकारी है।

कक्षा एक से लेकर कक्षा 12 तक की छात्राएँ हॉल में एकत्र होकर अतिथि की प्रतीक्षा में अनुशासन से बैठी थीं। अचानाक हॉल में जिला विद्यालय निरीक्षक (डी0 आई0 ओ0 एस0) श्री ओम प्रकाश जी का आगमन हुआ, जिनका सभी ने तॉलियों से अभिवादन किया। वे विद्यालयों का निरीक्षण करने निकले थे। उन्होंने हम छात्राओं से बातें की। समाज में शिक्षकों की महत्ता व भूमिका से उन्होंने हमें अवगत कराया। ओम प्रकाश जी के विचार से एक सच्चे विद्यार्थी का गुण है– जिज्ञासा। अतः सभी विद्यार्थियों को जिज्ञासु होना चाहिए व कुछ समझ न आने पर हमें प्रश्न करना चाहिए तथा किसी भी प्रकार के सन्देह को मन में नहीं रखना चाहिए।

उन्होंने हमें समझाया कि एक शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य किस प्रकार के संबंध होने चाहिए। शिक्षक और विद्यार्थी एक दूसरे के पूरक होते हैं। शिक्षक के बिना विद्यार्थी और विद्यार्थी के बिना शिक्षक का कोई अस्तित्व नहीं होता। इन्हीं वचनों के साथ महोदय जी ने हमारे विद्यालय से प्रस्थान किया।

कुछ क्षण उपरान्त ही महिला पुलिस थाना अध्यक्ष श्रीमती नीलेश कुमारी जी हम सभी के समक्ष उपस्थित थीं। उनकी उपस्थिति मात्र ही हमें गौरवान्वित कर रहो थीं। उन्होंने बालिकाओं के साथ समाज में हो रहे अपराधों के प्रति हमें सचेत किया। उन्होंने हमें बहुत–सी महत्त्वपूर्ण बातें बताई जिनमें से कुछ अग्रलिखित है–

- आत्मविश्वास जरूरी है,क्योंकि जब तब हम डरते रहेंगे, हमें डराने वाले बढ़ते रहेंगे।
- सबसे ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत है अपनों से। किसी पर ऑख बन्द करके भरोसा नहीं करना है और हमेशा सतर्क रहना है।
- अपनी गट फीलिंग पर भरोसा करें, गुड टच और बैड टच के मध्य के अंतर को पहचानें व कुछ भी घटित होने पर सर्वप्रथम माता–पिता को बताएं।
- माता–पिता की बात मानें क्योंकि जब तक हम समझदार नहीं होते,दुनिया से परिचित नहीं होते,तब तक हमें संरक्षण की आवश्यकता होती है।
- किसी भी दुर्घटना की जानकारी पुलिस को देने में संकोच न करें। पुलिस की स्थापना समाज में हो रहे अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए ही की गई है।

अन्त में उन्होंने हमें एंटी रोमियो टीम की कुछ महिलाओं से परिचित कराया, जो पुलिस की ही एक शाखा है। यह दल निजी कपड़ों में हमारे आस–पास विचरण करते हैं। इस दल का उद्देश्य प्रदेश भर में, स्कूलों और कॉलेजों के बाहर लड़कियों के साथ हो रही छेड़छाड़ को रोकना है। इस कार्यक्रम की समाप्ति पर रेनू मिस ने आगंतुको के प्रति आभार व्यक्त करते हुए निष्कर्ष रूप में कहा कि हमें चॉद नहीं बनना है कि लोगों की नजरें हम पर उठती रहें। हमें सूरज बनना है ताकि हमारे ऊपर दृष्टि डालने का काई साहस ही न कर सके।

प्रेरणा वर्मा – 12 ए

विद्यार्थियों को सुनाए समाचार

प्रेमनगर ईसाई टोला के निर्मला कॉन्वेंट गर्ल्स इंटर कॉलेज में बुधवार को प्रार्थना सभा के दौरान छात्राओं को अमर उजाला में छपी खबरों के पढ़कर सुनाया गया। इस मौके पर कॉलेज की प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम, शिक्षिका रेखा भार्गव, रीना चतुर्वेदी, कन्हैया सोनी, राकेश दुबे, गजेंद्र सिंह, एंजेलीना रोड्रिग्स मौजूद रहीं। अमर उजाला

देश के वीरों के त्याग और बलिदान को सभी करें स्मरण : प्रकाश पाल

'मणिपुर में 60 फीसदी मैतई समाज के पास केवल 10 फीसदी संपत्ति'

पुराने दोस्त और शिक्षकों क
देख खिल उठे चेहरे

संवाद न्यूज एजेंसी

झांसी। निर्मला कॉन्वेंट गर्ल्स इंटर कॉलेज में शनिवार को पहला पुरातन छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। विद्यालय के पहले बैच से लेकर 2017 बैच तक के कई विद्यार्थी और पूर्व शिक्षक-शिक्षिकाओं ने प्रतिभाग किया। अपने पुराने दोस्तों और शिक्षकों से मिलकर सभी भावुक हो गए।

पुरातन छात्र सम्मेलन में मौजूद छात्र-छात्राएं।

निर्मला कान्वेंट गर्ल्स इंटर कॉलेज में हुआ पुरातन छात्र सम्मेलन

अखबारों की दुनिया में

छात्राओं ने बनाए ... पाए पुरस्कार

हम अक्सर अपने घरों में अपने बड़ों को अखबार पढ़ते देखते हैं। वे हमें भी समाचार पत्रों को पढ़ने का सुझाव देते हैं। परन्तु हम सभी को इस टेक्नोलॉजी की दुनिया में सारी जानकारी सोशल मीडिया से प्राप्त हो जाने के कारण समाचार पत्रों को पढ़ना समय की व्यर्थता प्रतीत होती है। परन्तु यह ठीक नहीं। अखबारों को पढ़ने से हमें अपने आस–पास ,देश–विदेश इत्यादि की सही जानकारियाँ प्राप्त होती है। समाचार पत्र हमारे ज्ञान–भण्डार को बढ़ाने के लिए एक अच्छा माध्यम ह।

जैसा कि हम जानते है कि राष्ट्र का विकास उस राष्ट्र के युवाओं द्वारा ही होता है। जिसके लिए देश के सभी युवाओं का शिक्षित और विश्वभर में होने वाली घटनाओं से परिचित रहना आवश्यक है। इसी पहलू को ध्यान में रखते हुये समाचार पत्र अमर उजाला संस्थापक द्वारा विद्यालयों में प्रश्नात्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसी क्रम में दिनॉक 16 अक्टूबर 2023 को हमारे विद्यालय में भी यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें खेल, यातायात, इतिहास तथा सामान्य ज्ञान इत्यादि सम्बन्धी प्रश्न पूछे गये। जिसमें भूमिका, आस्था, खुशी, हर्षिता, दीपिका, शिवानी इत्यादि छात्राओं ने अपनी भागीदारी से विद्यालय को गौरवान्वित किया इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में समाचार पत्रों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना था। आप सभी के मन में प्रश्न होगा कि जब हमें सारी खबरें सोशल मीडिया से प्राप्त हो जाती है तो समाचार पत्र की आवश्यकता क्या है? कथन तो उचित है परन्तु ये बात तो हम सभी जानते हैं कि सोशल मीडिया अफवाहों का केन्द्र है। सोशल मीडिया पर उपलब्ध सभी खबरें सच नहीं होती। दूसरी ओर मीडिया, जो लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। उनमें से सबसे प्रमुख है– समाचार पत्र क्योंकि समाचार पत्रों की समस्त खबरे तथ्य संगत और प्रामाणिक होती है। अतः समाचार पत्रों की आवश्यकता भी यही है और लाभ भी यही। इसीलिए छात्र जीवन से ही सभी विधार्थियों को समाचार पत्र पढ़ने की आदत डालनी चाहिए।

शोभना कुशबाहा कक्षा 12 ए

र्षिकोत्सव में छात्राओं ने दिखाई प्रतिभा

डर से बनाएं दूरी, आत्मरक्षा है जरूरी

निर्मला कान्वेंट गर्ल्स इंटर कॉलेज में बालिकाओं को आत्मरक्षा के तरीके बताए

जार जगहों पर शान से लहराएगा तिरंगा

डाक विभाग ने मंडल में निकाली तिरंगा रैली

झाँसी

द सीक्रेट

मानव मन अनेक रहस्यों से भरा है जिसे समय–समय पर अनेक दार्शनिकों ने अपने विचारों के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया है। किसी भी घटना,विचार,वातावरण या व्यक्तित्व का प्रभाव व्यक्ति पर दो प्रकार से पड़ता है– सकारात्मक या नकारात्मक। किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है जिसमें व्यक्ति पर विचारों और घटनाओं का प्रभाव अधिक तीव्रता के साथ पड़ता है। इस अवस्था में बच्चे शीघ्र ही उद्वेलित हो जाते हैं। जीवन के इन रहस्यों से हमें परिचित कराने के लिए हमारी प्रधानाचार्या ने एक पिक्चर दिखाई 'द–सीक्रेट'(आकर्षण का सिद्धांत) जिसमें अनेक दार्शनिकों ने अपने तथ्य प्रस्तुत किये जो ध्यान देने के योग्य है। विशेषकर विद्यार्थियों को इन्हें अपने जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। ये तथ्य इस प्रकार है–

- हम जिस वस्तु के बारे में अधिक विचार करते हैं व जिसे पाने की चाह रखते हैं वह हमें मिल जाती है। परन्तु उसका भी एक निश्चित समय होता है जो निर्भर करता है कि आप उस वस्तु को कितनी शिद्दत से पाना चाहते है।
- हम किसी चीज को दो प्रकार से सोच सकते है–सकारात्मक या नकारात्मक। उदाहरणतया– हमारा दिन न बुरा न बीते कि जगह हम यह सोचे कि हमारा दिन अच्छा बीते।
- प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक दिन में 60 हजार विचार आते है और हमारे विचार ही हमारे जीवन को बनाते है।
- हमारा शरीर अधिकतर हमारे मन के वश में कार्य करता है। यदि हम अपने मन में विचार करें कि मैं थक गया हूँ तो हम स्वंय ही थका हुआ अनुभव भी करते है।
- सभी व्यक्तियों की इच्छायें अलग–अलग होती है। और उनकी इच्छापूर्ति के लिए किसी भी साधन का अभाव नहीं है।
- अगर हालात हमारी इच्छानुसार नहीं है तो हमें अपनी ऊर्जा शिकायत करने में बर्बाद नहीं करनी चाहिए। हम जितनी खुशियॉ बॉटेगे उनसे दुगनी हम स्वंय पायेगें।

इस सेमिनार के माध्यम से हम सभी छात्राएं बहुत लाभान्वित हुई। कई बार हम स्वंय को अनेक उलझनों में पाते है। जिनके समाधान के लिए ये सेमिनार अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ। समय–समय पर विद्यालय परिसर में कक्षा 9 से कक्षा 12 की छात्राओं के लिए ऐसे ही सेमिनार होते रहने चाहिए।

भूमिका माहौर – 12 ए

शब्द

''ऐसी वाणी बोलिए,मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।''

हम अपने जीवन में बहुत सी बातें बहुत से शब्द बोलते हैं। जिनमें से कुछ शब्द ऐसे होते हैं। जो दूसरों के दिलों को छू जाते है और कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो दूसरों के दिलों में कॉटे की भॉति चुभ जाते है। शब्दों के द्वारा ही अपने पराए और पराए अपने हो जाते हैं। कई बार हम अपनों से ही कटु वचन बोल जाते हैं और जिसका पश्चाताप् हमें बाद में होता है। शब्द तो वे होते हैं जो शांत वातावरण को मनोरंजित कर दे। दु:खी जीवन में सुखों के रंग भर दे। जो मनुष्य जैसी वाणी बोलता है उसे वैसा ही फल मिलता है। कहने का तात्पर्य यह है कि–

'शब्द सम्हारे बोलिए शब्द के हॉथ न पांव
एक शब्द औषधि करे,एक शब्द करे घाव।'

अर्थात् हमें अपना एक–एक शब्द संभलकर बोलना चाहिए। हमारा एक शब्द दूसरों के लिए औषधि का काम करता है। और वही दूसरी ओर हमारा एक कटु शब्द दूसरों के लिए घाव की तरह काम करता है। अतः हमें सदैव मीठी वाणी बोलनी चाहिए।

पलक अहिरवार – 10 ए

मॉ

गोद में रख के हमको पाला।

अपने हाथों से खाना खिलाया
हर पल हर दम हमें सभांला
वो मेरी मॉ है
घर सॅवारते.. सॅवारते कई साल निकल गये
चुप.चुप सुनते बहुत काल निकल गये
क्योंकि तेरे बोलने से मॉ ना जाने कितने
रिश्ते थम गये, रिश्ते थम गये
हर पल तुम्हारा ख्याल रखेगी
कभी ना तुमसे सवाल करेगी
दर्द अपने कभी ना बतायेगी
खुशी अपनी किसी को ना जतायेगी
समझौता करना है उसका काम
मॉ है उसका नाम।

दीपाली– 10 बी

मॉ

मॉ मुझको अपने हाथों से तू खाना खिला दे,
फिर उसी गिलसिया में मुझको तू पानी पिला दे।
बैठा कर अपनी ममता की छॉव में,
मुझे फिर मेरे बचपन से मिला दे ।
न जाने कब से सोयी नहीं जिंदगी के इस शोर में,
तू सुना के लोरी मुझे फिर से सुला दे।
जिंदगी के इस सफर में लड़खड़ाती हूँ और गिर जाती हूँ।
तू पकड़कर मेरी उॅगली मुझे फिर से चलना सिखा दे।
जमाने ने छीन ली है मुझसे हॅसी मेरी,
मैं फिर खिलखिला के हॅस दूं, तू फिर कहीं गुदगुदा दे।
मॉ मुझे अपने हाथों से तू खाना खिला दे ।

सिदरा अहमद-12 सी

खुला आसमान

आज की बेटियॉं खुले आसमान मे,
पंख लगाकर उड़ने लगी है।

अपने सभी सपने अब हकीकत में,
दिन–प्रतिदिन पूरे करने लगी है।

अब नहीं बंधी पुराने जमाने की बेड़ियॉं,
अब हर पल स्वतंत्र जीवन जीने लगी है।

अब नहीं मॉंगती बाबुल से उपहार,
खुद कमाकर फरमाइशें पूरी करने लगी है।

पुराने जमाने में बेटी को कहॉं थे अधिकार,
अब तो हर क्षेत्र में अपना नाम करने लगी है।

पहले तो बटियॉं रह जाती थी दायरे में,
अब तो हर दायरे से दूर विस्तार करने लगी है।

पहले जमाने में कहॉं था वर चुनने का अधिकार
अब तो स्वयं चुनाव करने लगी है।

अच्छा –बुरा अब तो वो खुद समझने लगी हैं।
अब हर दबाब अस्वीकार करने लगी हैं।

सामाजिक परंपराओं में घिरी बेटियॉं,
अब तोड़कर हर दीवार पार करनेलगी हैं।

नई सोच में समाज का निर्माण करने लगी है,
अब हर प्रतियोगिता में भाग लेने लगी हैं।

शाहिना बानों – 12 ए

हम चार

जब आई थी मैं विद्यालय
ना था कोई मेरा मित्र
एक दूजे को जाना समझा
फिर बन गये हम सब मित्र
वैसे तो मेरे, बहुत हैं मित्र
पर हम चार हैं, सबसे विचित्र
हरदम रहते सबसे आगे
कभी नहीं मुश्किलों से भागे
हम चारों में है अलग खुबियॉं
एक हॅंसती तो एक गुस्साती
शैतानी हम खूब मचाती
किसी को ना हम दु:ख पहुँचाती
एक के पीछे सब लड़ जाती।
कक्षा में खूब मनोरंजन करती
दोस्ती हमारी सबसे अच्छी
और हमेशा रहेगी पक्की।

वंशिका राय 9 स

सपना

सपने ऐसे देखो कि दुनिया में,
मिसाल बन जाए।
काम ऐसा करो कि
दुनिया देखती रह जाए।
इतना भरोसा है खुद पर,
कि कुछ कर दिखाऊॅंगी।
अपना नाम दुनिया में,
जरूर बनाऊॅंगी।
बस इन्ताजार है उस दिन का,
जब सबकी मैं शबाशी पाऊॅंगी।
अपना और अपने माता–पिता का,
सिर ऊॅंचा उठाऊॅंगी।
गलती कर न घबराऊॅंगी,
गिरकर फिर खड़ी हो जाऊॅंगी।
लेकिन सपना तो जरूर,
पूरा करके दिखाऊॅंगी।

हिमांशी सिंह – 12 बी

बेटी द्वारा पिता को समर्पित

हर एक चहल कदमी यादगार है,
हर एक बात यादगार है।

पिता के साथ जीवन के पहलुओ को,
समझने का सिलसिला बरकरार है।

पाठशाला में पहले दिन जाने की घबराहट,
और उस घबराहट से निपटने की ताकत।

फिर सही–गलत को समझने की परख
फिर उससे मिलने बाली बड़ी राहत।

विवेक पूर्ण व्यवहार से
सीखने का सिलसिला बरकार है।

कठिन पथ पर निडरता, प्रत्येक कदम में सत्यता,
सुख–दुःख में समानता का संगीत देने वाले
पिता एक फनकार है।

पढ़ने का शौक हो या गाड़ी चलाने का शौक,
या नई जगह देखने का शौक हो, ...
पिता के साथ सब सपने साकार है।

मेरी हर कही अनकही बात के वे जानकार है।
मेरे जीवन में खुशियों के रंग भरने वाले चित्रकार है।
उनके साथ संस्कारों का सिलसिला बरकरार है।

हिना सिंह परिहार – 11 ए

फूलों का आभार

आज सुबह चिड़ियों ने गाकर गाना, फूलों को जगाया।
पत्तों ने ओस की बूंदो से,उनका मुंह धुलवाया।
सूरज ने सुनहरी किरणों से,उनको खूब सजाया।
बादलों ने तानकर छतरी,उन्हें धूप से बचाया।
बच्चों ने उनके सुर्ख रंगो को,आँखो में बसाया।
फूलों ने खिलखिलाकर,सबका आभार जताया।

वर्षामीना 9 सी

समय का महत्व

अँधियारा ढल जायेगा, उजियारा छा जायेगा।
समय का जो उपयोग करोगे,हर दुःख यूँ कट जायेगा।
अगर सफलता पानी है तो, कसौटी पर उतरना होगा।
बिना समय बर्बाद किये, परिश्रम तुम्हे करना होगा।
यदि ये तुमने कर लिया तो,परिश्रम का फल मिल जायेगा।
अँधियारा दल जायेगा, उजियारा छा जायेगा।

मुस्कान राय – 11 बी

मेहनत का फल मीठा

मेहनत का फल होता मीठा।
मेहनत बिन सब कुछ है सीठा।।
मेहनत की जो रोटी खाये।
सुख–समृद्धि जीवन में पाये।।
मेहनत से जो करते काम।
उनका होता जग में नाम।।
मेहनत बिन कुछ भी न होता।
मेहनत बिन नर सब कुछ खोता।।
मेहनत का सुखमय परिणाम।
मेहनत से यह जगत तमाम।।
इसका मंत्र सदा तुम जपना।
मेहनत से सब होता अपना।।

आशिकानायक 10 ए

दुःखियों का प्यार करो

सबसे ऊँची भक्ति सेवा,
इसका तुम प्रचार करो।
छोड़ो सारे धर्म के झगड़े,
और दुःखियों को प्यार करो।
छोड़ दो मोह माया का चक्कर,
डूबा है, हर शाम को दिनकर।
यह जीवन अनजान सफर है,
सबका तुम उपकार करो।

सिमरन 12 सी

जीवन इसी का नाम है।

छोड़ तम की क्षीणता को,
बन साहस का प्रतीक तू।
मत उलझ इस वेदना में,
याद रख है निर्भीक तू।
सुख–दुःख दो पहलू है जीवन के,
आना – जाना इनका काम है
मत हो उदास इन परिस्थितियों से,
अन्धकार के बाद सुबह,
और हर सुबह के बाद शाम है।
जीवन इसी का नाम है।

मानषीभास्कर 11 बी

कंकीट के जंगल

क्या मिला हमें, कंकीट के जंगल उगाकर।
सासों को तड़फ गये, धरती की हरियाली काटकर।
साफ आसमान को तरस गए, चलो फिर जुट जाएं।
जंगल उगाकर जीवन बचाए।
एक शाख पकड़कर, दस लोगों का फोटो खिचवाने से
होगा क्या हासिल।
चलो जितने पौधे लगाए, उन्हें वृक्ष होने तक बचाए।
अंधी दौड़ में शामिल होकर, सोचे हुआ क्या हासिल।
चलो धरती की चुनरिया, फिर से हरी रंगवाए।

मान्यासिंह 10 सी

मॉ मरियम

मॉ, तू कितनी शीतल पावन है,
लगती सबको मन भावन है।

तेरी ममता अपरम्पार है,
तू तो दया का भण्डार है।

मन से जो तुझको ध्याता है,
मुँह मॉगा फल वो पाता है।

दर तेरा पावन पवित्र है,
मॉ तेरा निर्मल चरित्र है।

तू तो स्वर्ग की रानी है,
बड़ी कोमल तेरी कहानी है।

जब दिल से तुझे पुकारा है,
मॉ तेरा मिला सहारा है।

संकटों से तूने उबारा है,
मैं दरिया तू ही किनारा है।

श्रीमती सविता शर्मा(अध्यापिका)

'अभिभावक के उद्‌गार'

(बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए विद्यालय प्रबंधन एवं शिक्षक–शिक्षिकाओं की संघर्षमय दास्तॉ।)

आदरणीय प्रधानाचार्या जी,

सादर अभिवादन!

विद्यालय से संबंधित अपने अनुभवों को सांझा करने का अवसर प्रदान करने के लिए मैं आपको साधुवाद देता हूँ। मेरी पुत्री शोभना कुशवाहा इस विद्यालय की कक्षा 12 ए की छात्रा है। मैंने अनुभव किया है कि यहॉ भिन्न–भिन्न विषयों को पढ़ाने वाले अध्यापक–अध्यापिकाओं द्वारा बच्चों को सदैव उचित मार्गदर्शन प्राप्त होता है। विशेष रूप से वर्ष भर चलने वाली विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से छात्राओं के जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करना और मनोंरंजन करते हुए बिना किसी तनाव के बच्चों को शिक्षा प्रदान करना उल्लेखनीय है।

मैंने सदैव अनुभव किया है कि इस विद्यालय में न केवल विषय ज्ञान बल्कि उनके सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए वर्ष भर की रूपरेखा तैयार की जाती है। एक सुदृढ़ व्यक्तित्व के लिए जिन गुणों की आवश्यकता होती है। उन सभी को विभिन्न कार्यकमों के माध्यम से छात्राओं में उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है।

मानव मूल्य "जिसकी नींव बच्चो में विद्यालय स्तर पर ही पड़ जाती है और जीवन पर्यन्त उसके साथ रहती है।" इसकी शिक्षा इस विद्यालय में बखूबी दी जाती है। साथ ही सख्त अनुशासन में रहने की आदत द्वारा श्रेष्ठ संस्कारों का बीजारोपण करके छात्राओं को राष्ट्र की एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार किया जाता है। ताकि वे भी भविष्य में देश के विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सके।

ऐसे कई प्रमाण हैं कि यहॉ से पढ़ कर निकली हुई छात्राएँ आज विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं। और अपने परिवार और विद्यालय का नाम रोशन कर रहीं है।

एक बात और है जो मैंने इस विद्यालय में देखी है, यहॉ "अभिभावक–सेमिनार' का आयोजन भी किया जाता है। जिसमें सम्मिलित होकर मैंने देखा है कि ये सेमिनार अभिभावकों को दृष्टिगत रखते हुए काफी लाभान्वित करने वाले हैं। बच्चों के पालन–पोषण में किन बातो का ध्यान रखना चाहिए, अभिभावकों को बच्चों के प्रति क्या सावधानियॉ रखनी चाहिए। इस पर बहुत अच्छे से विचार–विमर्श किया जाता है।

अन्त में मैं प्रधानाचार्या जी व समस्त विद्यालय परिवार के प्रति उनके द्वारा किये जाने वाले बहुमूल्य योगदानों के लिए तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

संतोष कुशवाहा
(अभिभावक)

खेल संसार के उभरते सितारे

खेल बनाम शारीरिक शिक्षा अर्थात खेलने से शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम होता है। जीवन में जितनी आवश्यक शिक्षा है उतना ही आवश्यक खेलकूद है। तभी यह उक्ति प्रचलन में है कि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास हो सकता है।" खेल व्यक्तित्व का निर्माता होता है। एक स्वस्थ शरीर ही जो हमें आगे बढ़ने और उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होता है।

खेलों के उपर्युक्त महत्व को ध्यान में रखकर हमारे विद्यालय में विद्यालय स्तरीय और अन्तर्विद्यालयीय खेल–कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इस वर्ष आयोजित होने वाली खेलकूद प्रतियोगिताओं का विवरण इस प्रकार से है–

- ऋषभ सरावगी मेमोरियल फाउण्डेशन द्वारा आयोजित जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगितायें जिनका आयोजन दिनॉक 01–09–2023 से 09–09–2023 तक किया गया। इन प्रतियोगिताओं में हमारे विद्यालय निर्मला कॉन्वेंट की छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

जिनके परिणाम इस प्रकार से रहे–

1.एथलेटिक्स–1500 मीटर – अर्पिता स्वर्ण पदक
2.बॉस्केट बॉली जूनियर – स्वर्ण पदक
3.बॉलीवॉल जूनियर– स्वर्ण पदक
4.हैण्ड बॉल जूनियर – स्वर्ण पदक
5.किकेट जूनियर – स्वर्ण पदक
6.किकेट सीनियर – रजत पदक
7.फुटबाल सीनियर – रजत पदक

- विद्यालय स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता–

विनर टीम – हरा दल – प्रथम स्थान
रनर अप – नीला दल – द्वितीय स्थान

- विद्यालय स्तरीय बॉलीबाल प्रतियोगिता–

विनर टीम – नीला दल – प्रथम स्थान
रनर अप – लाल दल – द्वितीय स्थान

- विद्यालय स्तरीय खो–खो प्रतियोगिता–

विनर टीम – हरा दल – प्रथम स्थान
रनर अप – पीला दल – द्वितीय स्थान

- विद्यालय स्तरीय बॉस्केट बाल प्रतियोगिता–

विनर टीम – लाल दल – प्रथम स्थान
रनर अप – नीला दल – द्वितीय स्थान

इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त छात्राओं ने प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिताओं में भी उत्साह पूर्वक भाग लिया और उन खेलों में बहुत से अनुभव प्राप्त किये तथा मन में संकल्प लिया कि भविष्य में विजयी होकर वापस आयेंगे। ये प्रतियोगितायें इस प्रकार है–

प्रदेश स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता – आगरा
प्रदेश स्तरीय टेबिल टेनिस प्रतियोगिता – मेरठ
प्रदेश स्तरीय बॉलीबॉल प्रतियोगिता – मिर्जापुर

गजेन्द्र सिंह (पी0टी0आई)

अंलकरण समारोह

यह सामान्य सी बात है कि सभी व्यक्ति एक समान नहीं होते। योग्यता, गुणों और कार्य–कुशलता के आधार पर उनके बीच में पर्याप्त भिन्नताएँ होती है। नेतृत्व का गुण किसी–किसी में ही होता है। परन्तु इतना निश्चित है कि नेतृत्व आदिकाल से मानव जीवन का हिस्सा रहा है। नेतृत्व अपने आप में बहुत से गुणों को समाहित किये रहता है जैसे–उत्साह स्फूर्ति,धैय,ईमानदारी,कर्त्तव्य निष्ठा, स्नेह, निर्णय शक्ति, समानता, रचनात्मकता,संकल्पशक्ति समर्पण इत्यादि। इन सभी गुणों की नीवं व्यक्ति में बाल्यकाल से ही पड़ जाती है। और इन गुणों की नींव डालने में विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अतः प्रत्येक वर्ष की भॉति इस वर्ष सत्र 2023–2024 में भी विद्यालय में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के लिए कप्तानों और उपकप्तानों का चयन किया गया। दिनॉक 15–07–2023 को अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं के अभिभावकों को भी आमन्त्रित किया गया। तथा मुख्य अतिथि के रूप बेसिक शिक्षा अधिकारी माननीया नीलम यादव जी को आमन्त्रित किया गया। सभी कप्तानों के अभिभावक भी कार्यकम के साक्षी रहे। कार्यकम का प्रारम्भ दीप प्रज्वलन एवं प्रार्थना नृत्य के साथ किया गया। तत्पश्चात सभी कप्तानों और उपकप्तानों को ईश्वर को साक्षी मानकर कर्त्तव्य निष्ठा की शपथ दिलाई गयी। प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम एवं विद्यालय की प्रबन्धिका सिस्टर ऐलिस ने हैडगर्ल एवं वाइस हैडगर्ल को बैच एवं सेशे प्रदान किये एवं अन्य कप्तानों को अध्यापक/ अध्यापिकाओं द्वारा बैच व सैशे प्रदान किये गये। कार्यकम के अंत में मुख्य अतिथि ने अपने अभिभाषण द्वारा छात्राओं को शुभकामनायें प्रदान की। जिन छात्राओं ने कप्तानों और उपकप्तानों के रूप में शपथ ली उनके नाम इस प्रकार है–

- हैड गर्ल –खुशी श्रीवास
- वाइस हैड गर्ल –प्रियांशी शर्मा

दल	कप्तान	उपकप्तान
❖लाल दल	दिव्या यादव	पलक वैदराज
❖पीला दल	प्रेरणा वर्मा	रागिनी रायकवार
❖हरा दल	आफरीन खान	रागिनी शाक्या
❖नीला दल	मुक्ता यादव	दिव्यानी जायसवाल
❖अनुशासन	भूमिका माहौर	आमीन खानम
❖खेल कप्तान	सिमरन	कृतिका खरे
❖पत्रिका संपादक	दीपिका कुमारी	मानसी भास्कर

विज्ञान प्रदर्शनी

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने हमारे समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज हर दिन कोई न कोई नयी खोजें हो रहीं है। दैनिक दिनचर्या से सम्बन्धित कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसे विज्ञान ने प्रभावित न किया हो। बस.....आवश्यकता है इसे जानने और समझने की। आज विभिन्न क्षेत्रों हो रही खोजों से परिचित कराने के लिए निर्मला कॉन्वेंट गर्ल्स इण्टर कॉलेज की छात्राओं द्वारा प्रधानाचार्या जी की प्रेरणा और विज्ञान शिक्षकों के निर्देशन में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

दिनॉक 22–09–2023 का दिन विद्यालय क लिए यादगार दिन रहा जब विद्यालय प्राङ्गण नन्हें बाल विज्ञानियों द्वारा बनाये गये विभिन्न वैज्ञानिक मॉडल्स से भरा था। कक्षा 6 से 12 तक की छात्राओं ने विज्ञान विषय पर आधारित एक से बढ़कर एक मॉडल बनाये। सभी मॉडल कियात्मक थे। इस प्रदर्शनी में जिन विषयों से संबंधित मॉडल बनाये गये वे इस प्रकार हैं–

- प्राकृतिक आपदाओं से संबंधित– ज्वालामुखी विस्फोट का कियात्मक रूप, जल प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण के कारण और बचाव से संबंधित मॉडल।
- आविष्कारों से संबंधित– गोबर गैस प्लांट,द्रव चालित ब्रिज,द्रव चालित लिफ्ट,वाटर इंडीकेटर,सेंसर लाइट,सेंसर अलार्म, रोबोट,चन्द्रयान–2

इस प्रदर्शनी को देखने के लिए अभिभावकों को भी आमंत्रित किया। छात्राओं ने प्रभावशाली और स्पष्ट तरीके से मॉडल के कियान्वयन के विषय में अभिभावकों को समझाया। इस प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण चन्द्रयान–2 व रोबोट रहे।

कक्षा 6 से 8 तक की छात्राओं ने कम्प्यूटर विषय से संबधित मॉडल भी तैयार किये थे जो आकर्षक का केन्द्र रहे। वे मॉडल्स इस प्रकार हैं–

1. रिंग टोपोलॉजी
2. स्टार टोपोलॉजी
3. लैपटॉप
4. कम्प्यूटर के विभिन्न भाग नेटवर्किंग
5. नेट वर्किंग

विद्यालय में मिल रहे इस प्रकार के उत्कृष्ट ज्ञान और छात्राओं द्वारा विज्ञान विषय से सम्बन्धित किये गये श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए अभिभावकों ने प्रधानाचार्या जी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया।

दीपांजलि महोत्सव

''चमक उठी सन् संत्तावन में, वो तलवार पुरानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी,वह तो झॉसी वाली रानी थी।।''

वीरागंना महारानी लक्ष्मीबाई के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दैनिक जागरण द्वारा प्रत्येक वर्ष विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। जिसमें विद्यालय की सहभगिता भी होती रहती है।

इस वर्ष दीपांजलि महोत्सव के उपलक्ष्य में निर्मला कॉन्वेंट की छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। जैसे– मॉडल मेंकिंग, चित्रकला प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता इत्यादि। इस प्रतियोगिताओं में पुरूस्कार प्राप्त करने वाली छात्राओं को दैनिक जागरण द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किय गये। पुरस्कार वितरण जिला जन कल्याण महासमिति के केन्द्रीय अध्यक्ष डॉ0 जितेन्द्र तिवारी द्वारा किया गया पुरस्कार प्राप्त छात्राओं के नाम इस प्रकार है–

1. चित्रकला प्रतियोगिता –उन्नति कनौजिया 9–ए
2. चित्रकला प्रतियोगिता – विवाह 11–सी
3. निबंध प्रतियोगिता – दीपिका कुमारी 12–ए
4. निबंध प्रतियोगिता – प्रेरणा वर्मा 12–ए

श्री कन्हैया (प्रवक्ता)

पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता

प्रधानाचार्या जी की दूरदर्शिता के परिणाम स्वरूप सत्र 2023–2024 के शैक्षणिक कैलेण्डर में इस वर्ष बुक रिव्यू अर्थात पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता को सम्मिलित किया गया। ये प्रतियोगिता विद्यालय में पहली बार आयोजित की जा रही थी। इसमें किसी एक पुस्तक को चुना जाता है। जिसमें निम्न बिन्दुओं के आधार पर उसकी समीक्षा की जाती है–

1 पुस्तक की भूमिका
2 लेखक की संक्षिप्त जीवनी
3 विषय (थीम)
4 मूल्यांकन एवं पुस्तक के विषय में स्वयं के विचार।
5 किस आयु वर्ग के लिए उपयोगी है। और क्यों?

यह प्रतियोगिता 24 जुलाई 2023 को रखी गयी। इसके लिए कक्षा 12 के पाठ्यकम से सत्य की जीत खण्ड काव्य को चुना गया। जिसकी समीक्षा उपर्युक्त बिन्दुओं के आधार पर की गयी। इस प्रतियोगिता के परिणाम अप्रत्याशित परिणाम प्राप्त हुए। यद्यपि इस खण्डकाव्य की कथावस्तु अत्यन्त प्राचीन है किन्तु वह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। कवि ने इस कथा को अत्यधिक प्रभावी व युग के अनुकूल सृजित किया है। उन्होंने द्रापदी के चरित्र को प्राचीन काल की लाचार स्त्री के रूप में न दिखाकर आधुनिक काल की शक्ति शाली स्त्री के रूप में चित्रित किया है। जो अपनी रक्षा करने में स्वयं समर्थ है। कवि ने अपने लेखन कौशल से इस खण्डकाव्य में कृष्ण की अलौकिकता न दिखाकर एक सामान्य मानव को सामर्थ्यवान बनाया है।

यदि इस खण्डकाव्य को आधुनिक समय के साथ जोड़ कर देखा जाये तो हम देखते हैंकि लोक तन्त्रीय चेतना के इस युग में आज भी साम्राज्यवादी दुःशासनों की कमी नहीं है। ये दुःशासन दूसरों के मान–सम्मान, भूमि और सम्पत्ति हड़पने के लिए प्रतिक्षण घात लगाये हुए बैठे हैं। हमें इनका सामना कैसे करना है? इसकी प्रेरणा हमें यह खण्डकाव्य देता है। मेरे हिसाब से यह खण्डकाव्य प्रत्येक आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयोगी है और विशेष रूप से महिलाओं के लिए तो इसकी नितान्त आवश्यकता है।

इस प्रतियोगिता में जिन छात्राओं ने भाग लिया उनके नाम इस प्रकार है–

1.दिव्यांशी चतुर्वेदी 12–ए (प्रथम स्थान)
2.दीपिका कुमारी 12–ए (द्वितीय स्थान)
3.कृतिका शाक्या 12–बी (तृतीय स्थान)
4.वंशिका गुप्ता 12–सी (चतुर्थ स्थान)

सौजन्य से . . . .
हिंदी विभाग

Rani Lakshmi Bai

वाद–विवाद प्रतियोगिता

पूरे वर्ष के शैक्षणिक कैलेण्डर में उन सभी प्रतियोगिताओं को सम्मिलित किया गया जो छात्राओं के शारीरिक,मानसिक, तार्किक,बौद्धिक एवं सामाजिक विकास में सहायक होती है। उन्हीं में से एक थी वाद–विवाद प्रतियोगिता... जिसे अगस्त माह में आयोजित किया गया। इस प्रतियोगिता का विषय था–'सोशल मीडिया का प्रयोग छात्र–छात्राओं के लिए कहाँ तक उचित है?''इसके पक्ष और विपक्ष में छात्राओं को अपने विचार रखने थे।

जैसा कि हम सभी इसके बारे में भली–भाँति जानते है कि सोशल मीडिया का प्रयोग आज कल बहुत अधिक प्रचलन में है। (हर चीज के दो पहलू होते है–अच्छा और बुरा।) इसने हर क्षेत्र और हर एक आयु के व्यक्ति पर अपना प्रभाव छोड़ा है यदि इसके लाभ है तो हानियाँ भी है। जब तक सोशल मीडिया का प्रयोग सोच–समझकर और सीमित दायरे में किया जाता है। तब तक यह सुविधाजनक और लाभप्रद है। किन्तु जहाँ इसके प्रयोग में लापरवाही की गयी वहीं यह व्यक्ति के जीवन में उथल–पुथल मचा देने का कार्य करता है।

16 से 18 वर्ष की आयु में जब छात्र–छात्राओं को अच्छे और बुरे की समझ नहीं होती है जब चिन्तन और भावना की दृष्टि से उनके मन कमजोर होते हैं। तब सोशल मीडिया उन्हें भ्रम की स्थिति में डाल रहा है। उनके अन्दर धैर्य और ठहराव की कमी हो रही है। वे बाहरी दुनिया की चकाचौंध में फँसते जा रहे हैं। परिणाम स्वरूप वे स्वयं को हानि पहुँचाने लगते हैं।

सोशल मीडिया क्या है इसका किस प्रकार से उपयोग किया जाये। युवा पीढ़ी को भटकाव की स्थिति से कैसे बाहर लाया जाये। इन सभी सवालों के जबाव वाद–विवाद प्रतियोगिता के माध्यम जुटाये गये। इसमें चारों दलों की छात्राओं ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इस प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे–

- पक्ष – पलक वैद्यराज, रिषिका — 11–सी – (लाल दल) प्रथम स्थान; 12–सी – (हरा दल) द्वितीय स्थान
- विपक्ष – रागिनी मीना, मान्या — 11–सी – (नीला दल) प्रथम स्थान; 10–सी – (पीला दल) द्वितीय स्थान

अन्तर्विद्यालय वाद विवाद प्रतियोगिता

विद्यालय के संस्थापक स्व0 सखाराम नेवालकर जी की पुण्यस्मृति के उपलक्ष्य में शहर के लोकमान्य तिलक कन्या इण्टर कॉलेज में प्रतिवर्ष वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष भी दिनॉक 18–12–2023 को यह प्रतियोगिता आयोजित की गयी।इस प्रतियोगिता का विषय था – ''विद्यालयों में आयोजित होने वाली शिक्षणेत्तर गतिविधियाँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में सहायक है।'' इसके पक्ष तथा विपक्ष में प्रतिभागियों को अपने विचार प्रस्तुत करने थे।

शहर के अतिविशिष्ट गणमान्य नागरिक इस प्रतियोगिता के साक्षी बने। निर्णायक मंडल में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय तथा बिपिन बिहारी महाविद्यालय के प्रोफेसर्स को सम्मिलित किया गया।

इस वर्ष शहर के बारह विद्यालयों ने प्रतिभाग किया जिसमें निर्मला कॉन्वेंट की कक्षा 10 की दो छात्राओं ने भाग लिया तथा विषय को लक्षित करते हुए स्पष्ट रूप से खुलकर अपने विचार प्रस्तुत किए। छात्राओं के श्रेष्ठ प्रदर्शन को देखते हुए उन्हें पुरस्कार स्वरूप 500 / – रूपये की धनराशि प्रदान की गयी। छात्राओं के नाम इस प्रकार है–

1. कु0 योशिता मिश्रा – 10 बी (पक्ष)
2. कु0 नैन्सी –10 बो (विपक्ष)

सौजन्य से....

हिंदी विभाग

टूटी डिब्बी(कहानी)

एक शानदार ओर सुहावना मौसम था क्लास में रचना और रन्नों खेल रहे थे। तभी अचानक रचना,क्लास की सबसे शैतान और हर वक्त लड़ने को तैयार रहने वाली लड़की की पेंसिल बॉक्स पर जा गिरी। '' डिब्बी टूट गयी थी।'' ऐसे उस शैतान लड़की ने मैम से बोला। मैम ने रचना को डॉटते हुऐ बोला,''क्या जरूरत थी, क्लास में खेलने की?'' उस शैतान लड़की ने मैम से कहा, ''मुझे नई डिब्बी चाहिए। नही तो मुझे डिब्बी के पैसे दिलवाइये।'' तब मैम ने रचना से कहा कि अब तुम क्या करोगी? तब रचना बोली,''हम कल नहीं पर धीरे–धीरे 15 रूपये की डिब्बी के पैसे इकट्ठे करके उसे डिब्बी खरीद कर दे देगे।'' रचना के पिता ज्यादा अच्छा काम नहीं करते थे। उसके 4 भाई–बहन थे। और पॉचवीं वो खुद। स्कूल से लौटकर वह सोचने लगी कि 15 रूपये कैसे जोड़े। उसने अपनी माँ की घर के कामों में मद्द की और उसे अठन्नी मिली। उसके पिता काम से देर रात को लौटते थे। जो भी पिता के लिए रात तक रूकता और उन्हें खाना परोसता था। उसे पिताजी द्वारा जब कभी कुछ पैसे मिल जाते थे। एक दिन रचना के दादाजी उसे और उसकी बहन को स्कूल से लेने आए। उन्होंने पूछा, ''बेटा क्या खाओगे?'' रचना ने कुछ भी खाने से मना कर दिया और दादाजी से पैसे ले लिए। ऐसे ही कुछ दिनों तक उसने 15 रूपये इकट्ठे किये और अगले दिन विद्यालय में रचना ने उस शैतान लड़की को डिब्बी खरीद कर दे दी।

उक्त कहानी से हमें दो प्रकार की शिक्षा मिलती है कि हमें कभी धर्य नहीं खोना चाहिए चाहे कितनी ही विपरीत परिस्थितियॉ क्यों न हो और दूसरी यह है कि हमारे अन्दर दूसरों को क्षमा करने का गुण होना चाहिए।

वैष्णवी यादव – 8 ए

मजदूर दिवस

(01 मई 2023)

उनकी गैर मौजूदगी में मंजिल हमेशा दूर है,
जो हमारे ख्वाबों को पूरा करता है,वोही मजदूर है।

कोई भी देश तब विकसित होता है,जब उस देश में कार्य करने वाले लोग मेहनती होते है। इन्हीं मेहनती लोगों के परिश्रम की सराहना करने हेतु हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे विद्यालय में 'मजदूर दिवस' को बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यकम का संचालन करते हुए श्री राकेश दुबे(प्रवक्ता) जी ने 'मजदूर दिवस' के महत्त्व को समझाया। कक्षा 12 की छात्राओं और सभी अध्यापकगण ने विद्यालय के सभी सह कर्मचारियों का माल्यार्पण और मिष्ठान के साथ स्वागत किया। छात्राओं ने एक प्रार्थना नृत्य प्रस्तुत किया कुछ कर्मचारियों ने विद्यालय के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यकम के अन्त में हमारे विद्यालय की प्रधानायार्या जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए धन्यवाद के साथ इस कार्यकम का समापन किया।

सर्दी गर्मी की परवाह नहीं,
बस मेहनत के फल की चाहत है।
सब काम सफल करके दिखलाए,
अदम्य उनका साहस है।

श्रीमती अर्चना सिंह
अध्यापिका

अभिभावक सेमिनार

जन्म दाता ही नहीं,जीवन दाता भी होते है,अभिभावक।
प्रतिकूलता सहकर भी,अनुकूल परिवेश देते है,अभिभावक
अभिभावक के प्रति मत बनों कृतघ्न।
बच्चों के बड़ा होने तक परवरिश देते हैं अभिभावक।

माता–पिता और शिक्षक का एक ही लक्ष्य होता है, बच्चे की सफलता। इसलिए आवश्यक है कि इन दोनों के बीच संवाद स्थापित हो। दोनों ही अपने अवरोंधों को दूर करें और साझा लक्ष्य की दिशा में काम करें। माता–पिता, शिक्षक और बच्चे की साझेदारी स्कूली प्रकिया को समृद्ध बनाती है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए विद्यालय की प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम द्वारा त्रिस्तरीय शिक्षक अभिभावक सेमिनार का आयेाजन किया गया। प्राइमरी,जूनियर और सीनियर। सेमिनार का प्रारम्भ एक प्रार्थना सभा द्वारा किया गया। तत्पश्चात निम्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया–

1. अभिभावक बच्चों को आस्थावान बनाऍं और उन्हें सही रास्ता दिखायें।
2. आज बच्चे बाहरी चकाचौंध की ओर खिंचे जा रहे हैं। अध्यापक और अभिभावक मिलकर उनके अन्दर वो शक्ति उत्पन्न करें कि वे सही–गलत को पहचान सकें। और भीड़ से हटकर अपना अलग ही रास्ता तय करें।
3. हमें बच्चों को जीतना है ताकि वे हम पर विश्वास कर सकें। विश्वास के वातावरण में ही वे अपने माता–पिता तथा शिक्षक के निर्देशन में कार्य कर सकेंगे।
4. आज शिक्षा के क्षेत्र में अवसरों की कमी नहीं है। इस लिए बच्चों में भटकाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। अतः माता–पिता उन्हें अपनी योग्यता के अनसार ही चुनाव करने के लिए प्रेरित करें। अपनी इच्छायें उन पर न थोपें।
5. संचार कान्ति के युग में सोशलमीडिया के प्रति युवाओं का आकर्षण बढ़ रहा है। फलस्वरूप वे डिप्रेशन में आ रहे है। सोचने–समझने और ध्यान देने की क्षमता उनमें बहुत कम हो रही है। अतः आवश्यकता है कि अभिभावक अपने बच्चे पर ध्यान दें। उनके लिए पर्याप्त समय दें। घर में प्रार्थना और शान्ति का वातावरण बनाये रखे।
6. बच्चों को प्रारम्भ से सही ऐसे संस्कार दे कि वे एक अच्छे इंसान बनें। ताकि भविष्य में वे एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकें। संसार को बदलने का सामर्थ्य उनकें उत्पन्न हो।
7. शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को पैसा कमाने की मशीन बनाना नहीं है। बल्कि ऐसी खुशी की ओर अग्रसर करना है। जहॉ उनकी अन्तरात्मा महक उठे।
8. विकास के इस युग आज भी समाज में लड़के–लड़कियों में भेद किये जाता है। अतः अभिभावकों को इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

सेमिनार के अन्त में अभिभावकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा गया है कि अभिभावक और शिक्षक बच्चे के दाऍं–बाऍं स्थित दो स्तम्भ के समान होते हैं। जब ये दोनों स्तम्भ बच्चे के साथ मजबूती से खड़े रहते है। तो बच्चे अपने आपको सुरक्षित महसूस करते है। ये सुरक्षा की भावना हो उनमें आत्मविश्वास जगाती है। अतः अभिभावकों का सहयोग इसी प्रकार मिलता रहे तो हम अपने लक्ष्य में सफल हो सके।
सभी अभिभावकों ने प्रधानाचार्या जी सिस्टर पूनम का उनके द्वारा दिये गये सुझावों के लिए हृदय से आभार व्यक्त किया।

श्रीमती रेनू रोबर्ट

स्वयं आगे बढ़े

अपने आपको धक्का देकर स्वयं आगे बढ़े।
क्योंकि कोई और आपके लिए नहीं करेगा।

वो कैसे?

1. एक लक्ष्य बनायें और उस पर अटल रहे।
2. असफल होनें से न डरें न अपना लक्ष्य बदलें।
3. खुद पर विश्वास रखें और उसे बनायें रखें।
4. मेहनत करने के लिए तैयार रहें।
5. खुद को बार–बार मोटिवेट करते रहें।
6. कुछ नया सीखते रहें।
7. भावनाओं पर काबू रखें ज्यादा न सोचे।

मैंने बहुत से लोगों को देखा है,जो अपनी अपनी जिंदगी में कीमती समय को बेकार की चीजों और फालतू बातों पर बर्बाद कर देते हैं। या अपनी दिनचर्या में ऐसे कामों पर या ऐसी बातों पर समय बर्बाद कर देते हैं। जिनसे उन्हें कोई फायदा नहीं होने वाला उल्टे उन्हें कभी–कभी मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है। कुछ लोग बिना मतलब की बातों पर भी अपने दिमाग के घोड़े दौड़ाते रहते हैं,और भूत भविष्य की बातों पर उलझे रहते हैं।

बच्चों बे मतलब या बेकार की बातों या कामों के बारे में सोचने से या उन पर समय बर्बाद करने से न केवल मानसिक परेशानी और तनाव मिलता है। बल्कि अपनी खुशी और मुस्कुराहट भी आपसे दूर हो जाती है। जिससे आप अपनी life में enjoy करना भूल जाते है। जिन्दगी को खुशी से जीना भूल जाते है। आपकी जिन्दगो प्रभावित होने लगती है। आपके सपने आपके ख्वाब अधूरे रह जाते है।

मेहनत कर इतनी कि,
उसमें तुझे कभी कोई कमी न लगे।
खुद को, इस काबिल बना कि,
हर शख्स सिर्फ तुझ जैसा बनने की चाह रखे।

श्रीमती सेलिना स्वामी (अध्यापिका)

सेवा. निवृत्ति

(दिनॉक – 29 अप्रैल 2023)

श्रीमती शशि निगम(प्रवक्ता)

आपके साथ कुछ लम्हे,
कई यादें बतौर ईनाम मिले,
एक सफर पर आप आई और
आपसे तजुर्बे हमें तमाम मिले।

हृदय जहॉ उदास था, वही मन प्रसन्न था, क्योंकि आज हमारे विद्यालय की वरिष्ठ प्रवक्ता श्रीमती शशि निगम जी अपने 28 वर्षों के कार्यकाल से निवृत्त हो रही थीं। उन्होंने अपने 28 वर्षों के कार्यकाल को बड़ी निष्ठा,लगन और ईमानदारी के साथ निभाया है। विद्यालय परिवार के सभी सदस्य उनके सरल, सौम्य व्यक्तित्व से प्रभावित रहे। उन्होंने छात्राओं का सदैव मार्ग दर्शन किया। हमेशा ऊँची और सकारात्मक सोच रखने वाली श्रीमती शशी निगम जी की सेवा–निवृत्ति कार्यकम के शुभ अवसर के हम सब साक्षी बने जो बहुत कम लोगों को प्राप्त होता है।इस अवसर पर विद्यालय द्वारा सांस्कृतिक कार्यकम प्रस्तुत किये गये। छात्राओं ने हर्ष और उल्लास के साथ,प्रार्थना नृत्य,गीत,नाटक आदि प्रस्तुत किये। श्रीमती रेखा भार्गव (प्रवक्ता) जी ने स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

सन् 1995 की सहायक अध्यापिका से लेकर सन् 2023 की सफल प्रवक्ता और कोऑर्डिनेटर के रूप में अपनी जिम्मेदारी के सफर को आपने अपने परिश्रम व सेवा से बखूबी निभाया। विद्यालय परिवार श्रीमती शशि निगम जी के अच्छे स्वास्थ्य और उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

S.D.G. (सतत विकास लक्ष्य)

इस वर्ष एक नयी सोच के साथ हमने 'नये सत्र' में प्रवेश किया। बच्चों की स्कूल डायरी का मुख्य पृष्ठ एक विश्वव्यापी कार्यक्रम के साथ डिज़ाइन किया गया जो सभी को आकर्षित करने वाला था। ये विश्व्यापी कार्यक्रम था–एस0डी0जी0 अर्थात सतत विकास लक्ष्य।

आज हम देख रहे हैं कि पूरा विश्व किसी न किसी आपदा या समस्या से जूझता रहता है। जैसे–जनसंख्या वृद्धि,गरीबी,भुखमरी,स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें,पर्यावरण संबंधी समस्यायें। (इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकारें प्रयास करती है और लक्ष्य निर्धारित करती है।)

S.D.G. अर्थात सतत विकास में 17 लक्ष्यों और 169 उद्देश्यों के लिए तैयार किया गया है तथा ''साझा खाका अभी और भविष्य में'' नाम दिया गया है।

इसे संयुक्त राष्ट्र महासभा के शिखर सम्मेलन में 193 देशों ने अपनाया था। यह एजेण्डा 1 जनवरी 2016 से प्रभावी हुआ और अगले पन्द्रह सालों यानि 2023 तक हासिल करने का लक्ष्य रखा गया है। इन लक्ष्यों का उद्देश्य सबके लिए समान,न्याय संगत, सुरक्षित,शान्तिपूर्ण,समृद्ध और रहने योग्य विश्व का निर्माण करना है। इस कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्य इस प्रकार है।

- गरीबी की समाप्ति
- जीरो हंगर (भुखमरी की समाप्ति)
- अच्छा स्वास्थ्य और तंदुरूस्ती
- गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा
- लैंगिक समानता
- स्वच्छ जल और स्वच्छता
- सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा
- अच्छा काम और आर्थिक विकास
- उद्योग नवोन्मेष और अवसंरचना
- असमानता में कमी
- सतत शहर और समुदाय
- जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन
- जलवायु कारवाई
- जल के नीचे जीवन
- भूमि पर जीवन
- शांति,न्याय और मजबूत संस्थाएँ
- सांझेदारी

संयुक्त राष्ट्र द्वारा इन निर्धारित लक्ष्यों पर भारत तेजी से काम कर रहा है। इस विश्वस्तरीय विस्तृत कार्यक्रम को 'निर्मला कॉन्वेंट की छात्राओं ने प्रत्येक पन्द्रह दिन के अन्तराल पर प्रातः कालीन प्रार्थना सभा में भाषणों,नाटकों और बुलेटिन बोर्ड में अपनी कलात्मक प्रतिभा को दर्शाते हुए लेख एवं चित्रों के माध्यम से दर्शाया। यद्यपि यह विश्वव्यापी कार्यक्रम था किन्तु संक्षिप्त रूप से अभिनय के माध्यम से इन कार्यक्रमों को देखकर या इनके बारे में सुनकर छात्राऐं अति लाभान्वित हुई।

श्रीमती रेखा भार्गव (प्रवक्ता)

बन तू आवाज

वृक्ष कबहुँ नहिं फल भरेवें, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारनै, साधुन धरा सरीर।।

संसार में ऐसे विरले ही होते हैं जो परोपकार के लिए शरीर धारण करते है। इतिहास गवाह है कि भारत में कई ऐसे महापुरूषों ने अपने जन्म से भारत भूमि को धन्य किया है।

इस वर्ष वार्षिकोत्सव की थीम **THE VOICE** अर्थात एक ऐसी आवाज जिसने किसी न किसी रूप में समाज का कल्याण किया है चाहे फिर वह शिक्षा के क्षेत्र में हो, चिकित्सा के क्षेत्र में हो अथवा पर्यावरण को बचाने के लिए हो। इनमें से जिन आवाजों को इस वर्ष की थीम के अनुसार चुना गया वे हैं–

अफरोज शाह–

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यकम द्वारा चैम्पियन्स ऑफ द अर्थ पुरस्कार से सम्मानित अफरोज शाह जिन्होंने समुद्र तटों की सफाई का बीड़ा उठाया।

सिस्टर सिरिल मूनी–

पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त सिस्टर सिरिल,जिन्होंने शिक्षा को अनाथों और झुग्गी झोपड़ियों तक पहुँचाया और उन्हें आश्रय भी प्रदान किया।

श्रीमती इड़ा सोफिया स्कडर

श्रीमती इडा सोफिया स्कडर जिन्होंने चिकित्सा के श्रेत्र में अभूतपूर्व काम किया। उन्होंने तमिलनाडु में किश्चियन मेडिकल कॉलेज खोलकर महिला चिकित्सकों की कभी को दूर किया।

आनन्द कुमार

पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त भारतीय गणितज्ञ,शिक्षाविद् तथा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं के स्तम्भकार आनन्द कुमार,जिन्होंने सुपर 30 कार्यकम चलाया।

मिताली राज

अर्जुन पुरस्कार, पद्म श्री पुरस्कार, तथा खेलरत्न से सम्मानित पूर्व भारतीय महिला किकेटर मिताली राज।

उपर्युक्त सभी महान व्यक्तित्वों की जीवन शैली और उनके द्वारा किये गये कार्यों से परिचित होकर बच्चों तथा अभिभावकों को भी यह प्रेरणा मिली कि किस प्रकार अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर हमें भी दूसरों की भलाई के लिए सोचना है।

प्रधानाचार्या जी सिस्टर पूनम के निर्देशन में और शिक्षक–शिक्षिकाओं के अथक प्रयास और परिश्रम से प्रोग्राम भलीभॉति सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम की खास बात यह रही कि विद्यालय के लगभग 600 बच्चों ने कार्यक्रम में प्रतिभाग किया जो अपने आप में एक बहुत बड़ी संख्या है। सारा विद्यालय प्रांगण " बन तू आवाज,दे तू आवाज, के नारों से गुजायमान हो गया।

इस वार्षिक उत्सव के मुख्य अतिथि मान्यवर विशप स्वामी जी पीटर पारापुल्लिल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में माननीय श्री राजेश कुमार सिंह (जिला विद्यालय निरीक्षक) उपस्थित थे। छात्राओं ने पूर्ण उत्साह व जोश के साथ अपने–अपने कार्यक्रमों को अभिव्यक्ति दी। अभिभावक गणों ने अपने बच्चों को कार्यक्रम मं उक्त भूमिका निभाते देख अत्यन्त प्रसन्नता जाहिर की तथा कार्यक्रम की सफलता पर प्रधानाचार्या जी को बधाई दी कार्यक्रम के अंत में विशिष्ट अतिथि महोदय जी ने सभी छात्राओं को बधाई दी तथा आशीर्वचनों से अनुग्रहीत किया तथा बच्चों के अभिनय कौशल की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

10

धन्य है, वो जो मन के दीन है
स्वर्ग के राज्य मे जाएंगे...
धन्य है, वो जो शोक है करते

मेरी पिकनिक

एक सुहावनी सुबह....हम सभी विद्यालय की जूनियर वर्ग की छात्राएँ पिकनिक गयीं। हम सभी बहुत उत्साहित थे। हमारा विद्यालय पिकनिक के लिए महारानी लक्ष्मी बाई के किले और अटल एकता पार्क गये। वैसे तो मैं अपने माता–पिता के साथ कई बार गयी हूँ। परन्तु अपने सहपाठियों के संग जाना एक नया ही अनुभव था। हम सभी पिकनिक बस से गये। रास्ते भर हम गाना गाते,हँसते–मुस्कुराते,बात–चीत करते गये। रानी लक्ष्मीबाई के किले में हमनें बहुत सी चीजें देखीं जैसे–गणेश मन्दिर, शिव मन्दिर, फॉसी घर आदि। फिर हम सभी अटल एकता पार्क गये वहॉ हमने मिनी ट्रेन,मिनी बस में सफर किया। हमारी पिकनिक बहुत ही शानदार रही। मैं अपनी विद्यालय की प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम को इस शानदार पिकनिक के लिए हृदय से धन्यवाद देती हूँ।

सोनाक्षी सैनी –8 ए

यादगार लम्हे

शैक्षणिक भ्रमण–

दिन जो शायद दोबारा न आये,
पल जो कभी हम भूल न पाये।मन में उमंग लिए,एक नया अंदाज लिए,
चले हम विद्यालय की ओर,
क्योंकि वो थी पिकनिक की भोर।
थीं चार कक्षाएँ चार बसें,
हर बस में बच्चे थे कसे।
शुरू हुआ सफर जहाँ,
कुछ मोड़ों पर रूकना पड़ा।
पहले पहुँचे सूर्य मन्दिर,
जहाँ श्रद्धा से झुकना पड़ा।
नाचे गायें मस्ती में, पहुँचे प्राणि उपवन में।
जहाँ मिले पक्षी अनेक, और मिला कोबरा स्नेक।
बाघ को भी हमने देखा, भालू भी छुप न पाया।
और ग्वालियर घूमने का,कुतुहल भी बढ़ आया।
पहुँचे हम ग्वालियर किले,
जहाँ हमें विदेशी सैलानी मिले।
किला है ग्वालियर की शान,
वहाँ मिला हमें एतिहासिक ज्ञान।
दिन था वो सोमवार, पहँचे हम सिखों के गुरूद्वार।
लंगर का भी स्वाद चखा,
परम शान्ति का अनुभव करा।
फिर ढलते सूरज के साथ,
किया अलविदा हृदय के साथ।
छुपा कर रखीं हैं, वे सारी यादें।
मार्ग में की हमने खूब सारी बातें।
ऐसे ही सफर बीता, कुछ नया जाना कुछ नया सीखा।
करते हैं धन्यवाद, सिस्टर आपको,
जो दिये ये हसीन पल हमको।

दीपिका कुमारी – 12 ए

ग्वालियरचिड़ियाघर

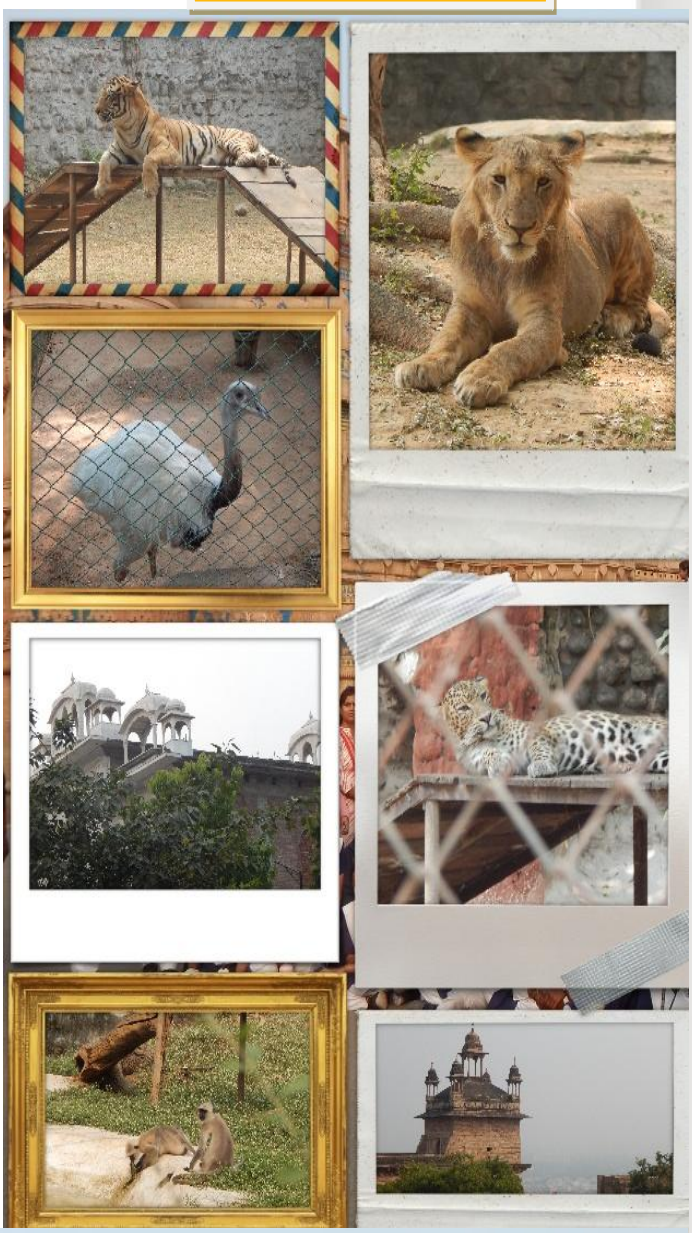

खोल दे पर

''खोल दे पर अपने,
अब उड़ान भरनी है।
अनदेखा कर जमाने की बातों को,
यदि सफलता प्राप्त करनी है।''

दिनॉक 10 फरवरी, 2024 को हमारे विद्यालय में विदाई समारोह (फेयरवेल) का कार्यकम बड़े धूमधाम से हुआ। इस कार्यकम को हमारी आदरणीय प्रधानाचार्या जी ने एक शीर्षक दिया ''टेक ऑफ''। इसी शीर्षक के आधार पर कार्यकम हुआ। इस कार्यकम का प्रारंभ प्रार्थना से हुआ इसके पश्चात् कक्षा 12 की छात्राओं की इस विद्यालय में उन यादों को एक '' जर्नी'' (यात्रा) के माध्यम से दिखाया गया जितने दिन उन्होंने विद्यालय में व्यतीत किये। इसके पश्चात् कुछ अन्य नृत्य,गायन इत्यादि के बाद विद्यालय की वाइस हेड गर्ल द्वारा हेड गर्ल को विदाई पत्र दिया गया। अंत में प्रधानाचार्या जी क भाषण के पश्चात् सभी छात्राओं को स्मृति उपहार वितरित किये गये। इस कार्यकम की सबसे खास बात यह थी कि इसमें विद्यालय छोड़ने के दुःख से अधिक महत्त्व उनके जीवन में आने वाले उस संघर्ष को दिया गया जो उन्हें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए करना है। हमारी पधानाचार्या जी ने अपने भाषण में सभी छात्राओं को उनके लक्ष्य हेतु उत्साहित किया व उन्हें जमाने के ताने, दुःखों और अन्य अनावश्यक तथ्यों को अनदेखा कर लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करने की सीख दी।

कु0 मानषी भास्कर कक्षा 11 बी

लो..सफर शुरू हो गया...

नया सफर...आपका, मेरा, हम सब का। विद्यालय का यह सत्र पूरा होते ही हम सारी नन्हीं गौरइयॉ अपने–अपने घोंसलों से निकलकर अपने आसमां की ओर उड़ जायेंगी। शुरूआती दौर में हमें हमारे पंख कमजोर लगेंगे,आसमां तक पहुँचने में हमें डर भी लगेगा। घबराहट भी होगी। कभी–कभी हमें पिंजरे में बंद होना पड़ेगा तो कभी हम जालों में भी फॅस जायेंगे। यात्रा में विपरीत परिस्थितियॉ तो बहुत सी आयेंगी। हमारे पंख भी नये होगें, कमजोर भी हो सकते हैं। पर टूट नहीं सकते। जब डर लगे तो ऑखे बन्द कर,हृदय में झॉकना और उस सपनें को देखना जो हमने आज देखा है। समाज हमें पिंजरे में बन्द कर सकता है लेकिन हमारे हौंसलों को नहीं परिस्थितियॉ कैसी भी हो,अँधेरा चाहे कितना ही घना क्यों न हो, याद रखना कि यह सिर्फ क्षणभंगुर है। सच तो सिर्फ हमारा आसमां, हमारा निर्धारित लक्ष्य है। जिसे हम केवल अत्यन्त परिश्रम और स्वंय पर भरोसा रख कर ही पा सकेंगे। तो चला, हे सखियों ऊँची उड़ान भरे, हमारा आसमां हमरी प्रतीक्षा कर रहा है।

दीपिका कुमारी 12ए (पत्रिका संपादक)

''बहुत हो गया काम काज,
सैर सपाटा कर ले आज।''

अरूणा श्रीवास्तव

उत्साह से भरा वो दिन जिसका हम लोगों को बेसब्री से इंतजार था। उसमें भी हम छ' मित्रों को कुछ ज्यादा ही प्रतीक्षा थी एक साथ मिल कर सैर–सपाटे की, जो इस वर्ष सेवा निवृत्त हो रहे थे। आखिर बह तारीख आ ही गयी और जिन्दगी में मिले अनुभवों में समाविष्ट होकर यादगार बन गयी। वह तारीख थी। 17 मार्च 2024 की। हम लोग प्रातः काल बस के द्वारा गन्तव्य की ओर रवाना हुए और मौज मस्ती करते हुए शीघ्र ही पहुँच गये।

यद्यपि यह मात्रा छोटी थी और दर्शनीय स्थल कम, किन्तु ये छोटी यात्रा भी हम लोगों को भरपूर खुशियॉ दे गयी। शहर था 'शिवपुरी' और स्थान था 'छतरी' जहॉ अभूतपूर्व सौन्दर्य था। संगमरमर के पत्थरों पर रत्नों के मेल से की गयी कारीगरी देखते ही बनती थी। मन्दिरों में अद्भुत शान्ति थी जो मनमस्तिष्क को सुकुन दे रही थी। उस स्थान पर जाकर पता चला कि यहॉ कई पुरानी हिन्दी फिल्मों के गानों की शूटिंग हुई है। उनमें से 'पाकीजा' फिल्म का एक गाना–*''ठांड़े रहियो ओ बांके यार रे '* जो यहॉ पर बने दर्शनीय उद्यान के हर एक स्थल की बार–बार याद दिला रहा था। उस स्थान पर ऐसा लगा मानो पल जैसे ठहर सा गया हो,हम उस समय की स्मृतियों में खो गये। सभी ने वहॉ बिताये गये सुन्दर पलों को कैमरे में कैद किया।

घूमने के बाद सभी ने एक साथ बैठकर स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिया और पुनः विद्यालय के लिए वापसी की। वापस आते समय हम चाय और स्नेक्स के लिए एक स्थान पर रूके, जहॉ सभी ने सुन्दर गीतों पर झूमते हुए स्वल्पाहार का भरपूर आनन्द लिया।

हम सभी शिक्षक/शिक्षिकाओं के उस दिन को सुन्दर और यादगार बना देने के लिए विद्यालय की प्रबंधन को हमस ब तहे दिल से आभार व्यक्त करते हैं।

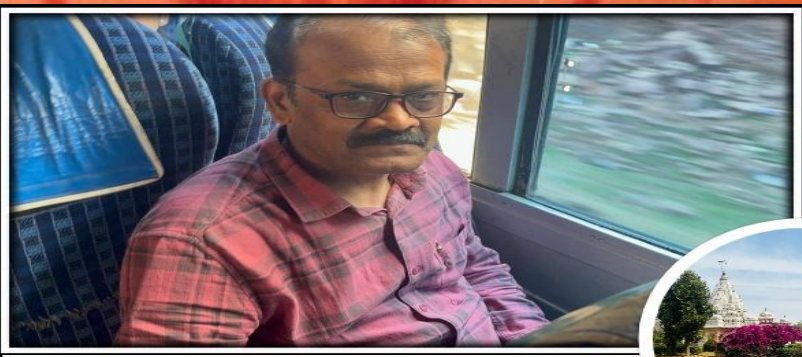

मेरी सखी

ये तुम दो कॉपियों में क्यों उतार रही हो? अचानक मैम की आवाज सुनकर मैं चोंक गई। उस समय मैं ब्लैक बोर्ड से नोट्स उतार रही थी। जो उन्होंने ब्लैक बोर्ड पर लिखे थे। मैं खड़ी हो गई। उनकी बात का मैं जबाब दे ही रही थी। कि मेरे पीछे बैठी मेरी सहपाठी श्रुति बोल पड़ी –– मैम यह अपनी दोस्त, सॉरी! ''सखी''रश्मि के लिए लिख रही है। क्योंकि आज वह एब्सेन्ट है। श्रुति के जबाब में व्यंग्य था। पर मैने उसकी बात का बुरा नहीं माना। अक्सर मैं और रश्मि एक दूसरे की अनुपस्थिति में विद्यालय से मिले कार्यों को करते थे। इस तरह हमारा कार्य समय पर पूरा रहता था। हमारी दोस्ती कक्षा 9 में हुई थी। हम दोनों ही इस विद्यालय में नये आये थे। रश्मि बहुत ही शांत और गम्भीर थी। उसकी गम्भीरता मुझे, उसकी ओर बार–बार आकर्षित करती थी। उसकी सीट, तीसरी रो में सबसे पीछे थी। अक्सर मैं पीछे मुड़कर उसे देखती थी तो वो भी मुझे देखकर मुस्कुरा देती थी। पर कभी बात नहीं होती थी। उसकी दबी हुई मुस्कुराहट मुझे उससे दोस्ती करने के लिए उक्साती थी। इस तरह दो माह गुजर गये। एक दिन मैं अपनी कक्षा में देर से पहुँची और अपनी सीट पर बैठ गई। फिर मैनें हमेशा की तरह पीछे मुड़कर रश्मि की ओर देखा। रश्मि अपनी सीट पर नहीं थी। मै निराश हो गई। तभी मैंने एक आवाज सुनी – हाय! मैं रश्मि– उसने मेरी तरफ अपना हाथ बढ़ाया। जो मेरी बगल वाली सीट पर बैठी हुई थी। उसको बगल में बैठा देख मैं उछल गई। मैने तुरन्त हो अपनी हाथ उसकी तरफ बढ़ाया। हैलो! मैं आरूषी। उसने दबी हुई मुस्कुराहट के साथ हाथ मिलाया। वो हमारी दोस्ती का पहला दिन था। बहुत ही जल्दी हमारी गहरी दोस्ती हो गई। हम एक दूसरे का बहुत ख्याल रखते थे। विद्यालय की गतिविधियों में भी हम एक साथ मिलकर नये–नये विचारों और सुझावों से कार्य एवं कार्यकम को एक नयापन देते थे। जिसके कारण हम दोनों को विद्यालय की मेधावी छात्रा के नाम से सम्बोधित किया जाता था। सकारत्मक सोचों ने हम दोनों में एक नई ऊर्जा का संचार किया था। जिसके फलस्वरूप मैंने उन खूबसूरत पलो का बहुत लुत्फ उठाया जो मैने उसे साथ बिताए थे। वह मुझसे हर छोटी–छोटी बातों को बताया करती थी। जैसे एक दिन उदास होकर बोली,''आज मैनें रोटी बनाई तो एक भी नहीं फूली।'' मैंने कहा कि तो क्या हुआ तू तो फूली हुई है। इस पर वह खिल खिलाकर हॅस दी। उस दिन से मैं उसको ''सखी'' कहकर ही बुलाती थी। उसके पूछने पर मैंने कहा ''सखी''और दोस्त में अन्तर है। ''सखी''वह होती है, जिसमें सादगी, निःस्वार्थ प्रेम, अपनापनऔर सच्चाई होती है। ये सब कुछ तुम में है। इस पर हमेशा की तरह रश्मि ने दबी हुई मुस्कुराहट से मेरी ओर देखा और पूछा, क्या दोस्त अच्छे नहीं होते? ''अच्छे दोस्तों को ही ''सखी''कहना अच्छा लगता है। क्योंकि ''सखी''शब्द मे पवित्रता छुपी हुई है। जो किसी भी दोस्त को कहकर सम्बोंधित नहीं किया जा सकता। आज के परिवेश ने दोस्ती के मायने ही बदल कर रख दिये हैं। बस–बस, अब ज्यादा फिलोसॉफी मत झाड़ो, अब चलो उठो.....

.....उठो न.....उठो न मम्मी, मेरा स्कूल आ गया।मै.....बुरी तरह चोंक गई जब मेरी पॉच साल की बेटी ने मुझे हाथ लगाकर उठाया। मैने अपनी बेटी का उसी स्कूल में एडमीशन कराया। जहॉ मैंने आर रश्मि ''सखी''नेइण्टर तक पढ़ाई की थी। आज मेरी बेटी का पहला दिन है। शायद इसी लिए मुझे अपने पुराने दिन याद आ गये थे। रश्मि इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण करके अपने पिता के साथ चली गई थी। उसके पिता आर्मी में थे। उसके बाद हम कभी नहीं मिले। उस समय मोबाइल फोन नहीं थे। इसलिए उसका कोई भी कॉन्टेक्ट नम्बर नहीं था। मैंने फेसबुक, इन्सटाग्राम पर भी उसको खोजने की कोशिश की। लेकिन उसका कोई एकाउन्ट नहीं था। वो थी ही ऐसी। लेकिन "मेरी सखी" मुझसे मिलने एक दिन जरूर आयेगी। ऐसा मुझ पूर्ण विश्वास है और साथ ही उसका इन्तजार भी...

आनन्द एडवर्ड

नक्षत्र

प्रथम पुरातन छात्र सम्मेलन–

9 मार्च 2024 का वह दिन जब निर्मला कॉन्वेंट गर्ल्स इण्टर कॉलेज के प्रांगण की दीवारें जैसे बोल उठी, हवा मानों खुशी से इठला रही थी, पेड़ पौधे मानों नाच उठे। ये कहते हुए अतिशयोक्ति न होगी कि सारा वातावरण ही मानों झूम रहा था, आगन्तुकों के प्रफुल्लित मन आज स्वयं उनके ही नियन्त्रण में न थे। इस दिन विद्यालय ने एक बार पुनः अपने बीते हुए इतिहास को दोहराया था। या कहूँ कि अपने 35–40 वर्ष पूर्व के पलों को भूतपूर्व छात्राओं के साथ जिया। आयोजन था पुरातन छात्र सम्मेलन का, जो विद्यालय में पहली बार आयोजित किया गया था। जिसमें सन् 1982, 1992 से 1994 से लेकर 2017 तक की छात्राएँ सम्मिलित हुई। पुराने दोस्त और शिक्षकों को देख सभी भूतपूर्व छात्राओं के चेहरे खिल उठे थे। सभी ने पूरे विद्यालय परिसर का भ्रमण किया, अपनी पुरानी कक्षाओं और फेवरेट जगह को देखकर, उन दिनों में की गई शरारतों को याद किया और भावुक हो गये।

विद्यालय के मुख्य द्वार से लेकर कार्यक्रम स्थल तक विभिन्न चरणों में आगन्तुकों के सम्मान की व्यवस्था की गयी थी। विद्यालय हॉल को एक होटल का रूप दे दिया गया गया। और स्टेज की सजावट तो मानो बीते दिनों की चहलकदमियों की यादें बयां कर रहा हो। रंगारग कार्यक्रम के अन्तर्गत मुख्य आयोयक प्रधानाचार्या सिस्टर पूनम ने सम्पूर्ण रूप से कार्यक्रम का संचालन किया। सभी ने कार्यक्रम के एक–एक पल को अपने मोबाइल में कैद किया। सिस्टर पूनम ने इस कार्यक्रम की प्रमुखता को उजागर करके कहा कि "जैसे आकाश मण्डल विभिन्न तारो से जगमगा रहा है वैसे आज 78–79 वर्षों से हमारे विद्यालय से पढ़कर निकले हुए आप सब भी सितारों से कम नहीं है आज सर्वत्र ये सितारे बिखरे हुए हैं। जिन्दगी ने हमें बहुत कुछ दिया है हमें भी दूसरों को देने की प्रेरणा लेनी चाहिए।"

बहुत सी भूतपूर्व छात्राओं ने अपने अनुभवों को सांझा किया, अनुशासन,एक दूसरे के प्रति प्रेम, व्यावहारिक ज्ञान, भाषा ज्ञान एवं शिक्षिकाओं की ममता तथा विद्यालय में किये गये कियाकलाप उनके जीवन–यापन में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान कर रहे हैं।

अंत में कार्यक्रम की सफलता एवं खान–पान की पूर्ण व्यवस्था के लिए सभी आगन्तुको ने भूरि–भूरि प्रशंसा की एवं हृदय से सिस्टर पूनम एवं समस्त शिक्षक–शिक्षिकाओं को धन्यवाद दिया।

Passion

What is passion? For some, it is just a simple word, but for others, it is their whole life. Passion is the work you are willing to spend your life on.

However, there are some who do not know how to identify their passion, especially in adolescence when their minds are very unstable. They are often very worried and confused about their goals.

Have you heard about the boy Manoj Kumar Sharma who belongs to a village and became an IPS officer? He was inspired by the SDO of his own district. We have many other examples like Rita Faria, Powell, Virat Kohli, Sudha Chandran, etc.

Similarly, some will say that their passion is dancing, singing, acting, playing cricket, etc. But there is a difference between a hobby and passion. A hobby is something you enjoy doing, something that brings you happiness, which you do in your free time.

On the other hand, passion is the work for which you are willing to sacrifice all other activities; it is something for which you are willing to push your limits to achieve. One has to work hard to become the best, and turning your passion into a profession is the way to achieve success. So, this is the time to identify your passion.

Prerna Verma
12A

Value of Music

Music! It may be just lyrics and a beat for some, but for others, it is emotion that helps them escape from harsh reality. It's a magical experience that brings out your true spirit and can cure your mind. Music can embrace you, making you feel like you're in another dimension.

Listening to music alone in the darkness brings mental peace. Music isn't just a song or an instrument; it's everything – the rivers, nature, birds, mountains, etc. Lifestyle is not a crime; there should be time for music in your schedule. Music teaches you to love yourself and enjoy life fully.

Vanshika Gupta
12th-C

"Friends of Mary Ward

Mary Ward is the name of that great soul who emphasized education for girls. She said in 1612, "There is no such difference between men and women that women may not do great things, and I hope in God that it may be seen in time to come that women will do much." Yes, today the members of FMW are making this dream come true, but Mary Ward is guiding us in this work. According to the Loreto Ministry, "To love the poor, persevere in the same life, die, and rise with them was all the aim of Mary Ward." The FMW group has been trying their best to fulfill the task of real life by following the path of Mary Ward. Children from poor and uneducated families are given the opportunity, as Mary has said, "Show yourself as you are and be what you show yourself." This maxim inspires all of us to work lovingly and genuinely. It is permissible to do good deeds, but like Mary Ward, act not out of fear but solely from love.

Mary Ward inspired me and my family with her maxim, "enriched us personally and intellectually in true sense, she was a steer who guided us to be virtuous as pure as the driven snow." These values of Mary Ward, we have to develop in children sincerely: freedom, justice, joy, truth, excellence, and nationality.

One thing that comes to mind is why we love Mary Ward; we honor Mary Ward because she teaches us humility, trust, and obedience to God's word. Mary Ward is alive or will remain alive through our actions; in our hearts, her voice will echo in all four directions. "We love you Mary Ward. We thank you Mary Ward."

Tresa Highfield
Coordinator of FMW

Christmas

From the beginning of the session, we had different programs and enjoyed them. Christmas was the last program of the year 2023, not of the session. All the students as well as teachers were eagerly awaiting this program. At the same time, we came to know that Sister Anna from Spain is coming and she will be a part of our program. This news made us happy. Sister Anna was unable to understand Hindi, but the students played their parts so well that she followed the message they conveyed. She was delighted to see the students' acting on the stage. Finally, she thanked all the teachers and the students.

Wow!

This year, the school feast was celebrated differently. On this day, we had a fete on the school campus. The specialty of this fete was that the teachers themselves prepared different dishes. Bursting with colorful stalls, games, and performances, teachers offered a delightful fusion of fun and purpose to the students. From homemade treats to thrilling rides, there was something for everyone so that each child could enjoy this fate according to their taste. Students enjoyed all the dishes and appreciated them. They took part in a singing competition and won prizes.

Seminar for the students

On August 24, 2023, our respected principal, Sister Poonam, organized a seminar for the students with the main purpose of increasing their confidence levels. This seminar was divided into two sections.

Section 1:

In this section, students were advised on what steps to take next in their lives. Principal Sister Poonam emphasized the importance of self-control, highlighting how excessive possession of anything can be harmful. Additionally, she discussed good and bad habits. The key highlights of this section were:

- Never postpone work.
- Do not give the key to your happiness to anyone.
- Fly like an eagle, not like a pigeon.
- Happiness is an inside job; it comes from giving.
- Find out what makes you happy and decide to be happy, no matter what happens.

Section 2:

In this section, a short film was shown to the students to illustrate the reality of social media. While the internet has made our lives easier and provides instant information, its speed of accessing anything can also ruin our lives. The film depicted a family with two daughters, one of whom was lured by a fraudulent tutor who exploited both daughters. The main purpose of this section of the seminar was to alert students to the dangers of social media and the internet, emphasizing that if we don't stop crimes, they will increase. The main points covered in this section were:

- Remaining silent in the face of wrongdoing is also an injustice.
- If we do not oppose injustice, something wrong will happen to us.
- Even if the whole world does wrong, always support what is right.
- Our body language speaks louder than our words.

Deepika Kumari 12-A

JPIC

"In Nirmala Convent, JPIC was introduced by Sister Tessy in 2021. The club members, which consist of children, continued the JPIC activities on the school campus. JPIC stands for justice, peace, and integrated creation. The club members conducted assembly seminars and various activities throughout the year, such as establishing a herbal garden on the campus, making paper bags, and distributing them to shopkeepers and medical stores to reduce the usage of polythene bags.

Through assemblies conducted by various classes, the club focused on Sustainable Development Goals (SDG), providing ecological education to the students, preparing bulletin boards related to SDG goals, and organizing orientation programs to motivate the children. The JPIC team cooperated well, successfully implementing all the activities on the campus."

Mrs. Reena Chakrawarthy (Lecturer)

Report on Parents' Day Celebration

The family of NCGIC (English medium) School celebrated the long-awaited day, "The Annual School Day-cum-Parents' Day," on December 2023. Approximately 350 parents attended the function, and every child from LKG to class 5th performed to express love and gratitude towards their parents.

The occasion was graced by the presence of our manager, Sister Alice, our principal, Sister Poonam, and Sister Shalini. It commenced with divine notes to Almighty God, thanking Him for His blessings in the form of a thanksgiving prayer dance that captured the hearts of all. This was followed by a beautiful welcome song.

The children presented a delightful program to showcase their love for their beloved parents through action songs, dance, speeches, and skits on a beautifully decorated stage in the school premises. The stage sparkled with the glittering costumes adorned by the students. The students were overjoyed to perform on stage, stamping their feet and swaying to a fantastic blend of Western, Eastern, and Christmas songs.

The program concluded with the proposal of the vote of thanks and the National Anthem. Parents were stunned to see the performance of their wards and their capabilities. They came forward to thank the sisters and teachers for their selfless service and appreciated them.

The children of classes LKG to 5th performed extraordinarily well, and everyone congratulated them. All went home happily, having learned beautiful messages for life.

All praise and glory to God.

Mrs. Jaspreet Kaur (Asst. Teacher)

Never Judge a Book by Its Cover

Sometimes, we find ourselves judging a person based on their external behavior, but it is not necessary that what our eyes perceive is always true. If we take the example of a book not too far away, we need to understand something about its content beyond just the title. Reading the book deeply is essential, as it can never happen that we gain knowledge without opening the book. Similarly, we cannot judge a person solely by their physical appearance.

In this world, people often compare each other to books, and men are no different. However, it is crucial to recognize the need to understand them deeply before forming judgments.

Riya Sahu
11-A

Women empowerment

Women empowerment implies the ability of women to make informed decisions in their personal and professional lives. It grants them equal rights in every aspect of life, including personal, social, economic, political, and legal spheres. Today, women are increasingly empowered to determine their life goals and professions, realizing their full potential.

Women are contributing to making the world a better place, working side by side with men. This fosters confidence in women, empowering them to lead meaningful, healthy, and successful lives, making them individuals in their own right. Without women's empowerment, we cannot eliminate injustice and gender inequality. It also ensures a safe working environment for them. Empowerment serves as a powerful tool against the exploitation and harassment of women.

Palak Vedhraj
11 C

Don't wish for it, work for it

Someone has rightly said that whatever we want to achieve or aspire to achieve does not come easily to us, but we have to work hard to achieve it. We get what we want, whether it is success, name, or wealth, but we should have a strong desire and willpower to obtain it. Many people consider failure as luck, give up their trials, and blame their destiny or luck. It is said that there is only one word that stands between gaining and losing, and that is hard work. One should make efforts to achieve it. Your destiny is made by yourself. Success does not come by walking; it has to be achieved only by working hard. "Instead of considering failure as destiny, one should strive for success.

Tanishka Nitin Pardeshi
11th-A

Turning Challenges into Growth

Once, there was a farmer who yielded more grains than others. His neighbour, a farmer, was jealous upon seeing this. He thought, "How can he yield more grains than me?" So, he started throwing all his waste material into that farmer's field. The first farmer ignored it.

A few months later, his grain was ready to harvest, and he got more grains than his neighbour farmer. At this, he asked him, "How do you get more paddy than me?" The first farmer replied, "It is because of you." The neighbouring farmer became surprised, saying, "How? I can't understand." The first farmer explained, "The waste that you throw in my field changes and converts into fertilizers that are helpful for the grains." Similarly, we should not react to the negative comments that people keep putting on us. Instead, we have to transform them into positive energy to brighten our lives.

Shekh Rimsha Iram
12-C

Time: A Student's Priceless Asset for Success

Time is priceless, an invaluable resource that neither returns nor waits for anyone. It holds unique significance in the life of a student. Unfortunately, many students fail to utilize their time effectively, leading to regrets later on.

There are countless examples in our lives that highlight the importance of time. Imagine being in a school competition where you have the capability to excel, but instead, you squander your time in gossiping and laziness. No matter how much you regret it afterwards, time will never come back. Time is a priceless asset in human life, and once it passes, even the wealthiest person cannot retrieve it.

Students often get sidetracked from the right path. Instead of focusing on their studies or goals, they veer towards the wrong direction. It is crucial for them to comprehend the significance of time and remember that this precious resource will not come back. Therefore, it is imperative to understand the importance of time and strive towards success in life.

Ragni Shakya 11b

Aim of Life

An aimless person is like a ship without direction. You cannot move forward without having a goal or aim in your life. A defined goal in life helps you understand your existence. A person who builds castles in the air can't achieve success; all their dreams will either shatter or fail at some point, leading to a limping journey through life. It is crucial to have a realistic aim in life, adding a new layer of meaning to your existence.

Generally, people choose their ambitions or goals by getting inspired by those around them—parents, teachers, or relatives play a role in this selection. Choosing the right goal based on your aptitude will help steer your life in the right direction, enabling you to find the true purpose of life and set an example for others on how to live life in the best possible way. However, one small mistake or choosing the wrong goal can shatter that dream. Therefore, everyone must be cautious while making this decision.

It's possible to face failures in reaching your goal repeatedly. Still, correcting mistakes and making the right decision at that moment will guide you towards the light in the right direction. Therefore, do not give up hope; keep trying and stay ambitious.

Samridhi Yadav

9th-A

Fear

What is fear? People fear unusual things. It acts as a barrier to success, making things more challenging than usual. If you're willing to exert extra pressure and effort, fear becomes conquerable.For example, if you fear heights, you may miss the joy of standing atop a mountain or engaging in adventurous sports like bungee jumping or skydiving. If you fear death, you might not fully enjoy life. To overcome fear, confront the source, engaging in activities related to it, even if they scare you.In conclusion, the full form of fear could be: FEAR - Forget Everything, FEAR - Face Everything and Rise.

Vanshika Gupta

12 C

Our ability.

Ability is a small word, but its meaning is even more confusing. I am a student, so I am going to present my views about students' life only. There are many such students who want to fly very high but shy away from working hard, and they try to satisfy themselves by giving excuses. If we leave all these things aside and pay attention to what we have and insist on recognizing our capabilities, then it will be very helpful to fulfil our dream of flying high.

Once I saw a movie in which a girl was not selected in the cricket team. Being disappointed, she went away from there, but in an accident, she lost her hand. Now she was more disappointed because she couldn't play cricket as she had lost her hand. But her coach knew her capability and told her when luck closes all the doors and those doors cannot be opened, we should achieve success by breaking the doors. The coach told her that life is not a game of logic but a game of magic. In the end, she started practicing playing cricket with one hand. Ultimately, she recognized her capability and thought that the door of success always opens; it depends on you how quickly you will enter it. From this story, I got a lesson that we should have something or the other in ourselves, and we should recognize our capacity or interest before doing things; only then can we show our ability.

Rishika 12-C"

Power of one

One song can spark a moment,
one flower can awaken the dream.
One tree can start a forest,
one word can herald spring.

One smile begins a friendship,
one handclasp lifts a soul.
One star can guide a ship at sea,
one word can frame the goal.

One vote can change a nation,
one sunbeam lights a room.
One candle wipes out darkness,
one laugh will conquer gloom.

One step must start each prayer,
one hope will raise our spirit.
One touch can show your care,
one voice can speak with wisdom.

One heart can know what's true,
one life can make the difference.
You see, it's up to you.

Unnati kanojiya
9th-A

A Poem for Nirmala

At Nirmala Girls College,
a convent of learning and peace,
Young ladies gather knowledge beyond measure,
a ceaseless increase.
With smiles that reach our eyes and
hearts that never fail,
We study for exams and work together,
problems to unveil.
We know our dreams, destined to grow wild,
Within the walls of Nirmala, like an adventurous child.
The dreams of young girls roam free,
A school for beauty and grace, a place for us to be.
Gathering knowledge and forming bonds of friendship,
As we study, learn, and towards empowerment,
we ship.
Nirmala's walls witness our transformation,
Into powerful girls, a testament to our dedication.

Ambassador of Clean India

I am a straw, but also an effort.
I embody courage and resolution.
I possess strength and considerable power.
If we all come together,
India will become cleaner and healthier.
I aspire to make India an example in the world.
Together, we will carry the torch of our duties.
I proudly serve as the ambassador of Clean India,
a worthy daughter of this great nation.

Varsha Meena 9th-C

A Bird in a Cage

I am a speechless bird that only
Lives in a cage.
I have wings but can't fly,
A mouth but remain speechless,
No freedom to soar the sky.
When I fly, I will experience real life,
Understanding the essence of existence.
I just want to escape,
To explore the vastness of the real world."

Zainab Shaikh 9th- A

What's in the Eyes

In father's eyes - Duty
In mother's eyes - Affection and care
In brother's eyes - Love
In sister's eyes - Affection
In the eyes of the rich - Pride
In the eyes of the poor - Hope
In the eyes of a friend - Support
In the eyes of the enemy - Revenge
In the eyes of a gentleman - Mercy

Manya Singh 9th-C

Life

Life is like a mystery,
Those who understand it will make history.
Life is not a bed of roses,
It entails sacrifices, happiness, and sadness,
Yet, with our goodness, we can survive any madness.
Be your own big bosom friend,
From the start of life to its end.
Enjoy every day like a red-letter day,
Always stay honest, never play foul play.
Give thanks to God in your halcyon days,
Be strong and face your bad days.
Life is like a mystery, those who understand,
They will make history.

Mansi Bhaskar11B

Dreams

The world of my dreams is lovely,
I am obsessed with it truly.
I will make my dreams come true,
And shape the dreams of others too.
The world of my dreams is lovely,
I am obsessed with it truly.
Dreams are the basis of life,
They help us survive the strife.
This world of mine is unique and lovely,
I am obsessed with it truly.

Kumkum 11B

Tips for Success

Always read, but write more.
Talk, but think more.
Play, but think innovatively.
Apply, and success will follow.
Eat, but chew more.
Sleep, but work more.
Feel sad, but laugh more.
Promise good health, for sure.
Order, but obey more.
Hate, but love more.
Fight, but compromise more.
People will surely like you.

Mrs. Reena Chakraworty (Lecturer)